मार्च 2020

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

एक ही व्यक्ति तीन प्रकार से है।
जो 'मंगलदास' है, वह जीवात्मा है।
'बावा' अंतरात्मा है और
'मैं' खुद परमात्मा है।

वर्ष : 15 अंक : 5
अखंड क्रमांक : 173
मार्च 2020
पृष्ठ - 36

Editor : Dimple Mehta
© 2020
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अंतिम विज्ञान -'मैं, बावा, मंगलदास'

संपादकीय

आत्मज्ञान होने के बाद महात्माओं को कदम-कदम पर यह उलझन खड़ी हो जाती है कि मुझे तो सौ प्रतिशत आत्मा में ही रहना है, अकर्ता पद में ही रहना है फिर भी ऐसे लुढ़क जाते हैं कि यदि कुछ भी अच्छा हो तो, 'मैंने किया' और बिगड़ जाए तो 'सामने वाले ने किया।' ऐसा हो जाता है। उसे ऐसा तो लगता ही नहीं है कि 'मैं शुद्धात्मा ही हूँ।' तो होता किसे है? तन्मयाकार कौन होता है? ऐसा भी अनुभव होता है कि मन-वचन-काया तो मिकेनिकल हैं और आत्मा तो ऐसा करवा ही नहीं सकता। यह रहस्य समझ में नहीं आने के कारण प्रगति रुक जाती है और अंदर निराश हो जाते हैं। शुद्धात्मा और मिकेनिकली काम करने वाले ये जो मन-वचन-काया हैं, उनके बीच में कुछ फोर्स है, वह क्या है? कैसे काम करता है? उसका स्वरूप क्या है? इन सारे प्रश्नों के एक्ज़ेक्ट स्पष्टीकरण परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) के गुह्यतम ज्ञान 'मैं, बावा और मंगलदास' से प्राप्त होता है।

मैं अर्थात् शुद्धात्मा, मूल परमात्मा, तीन सौ साठ डिग्री वाले! बावा यानी बीच वाला अंतरात्मा और मंगलदास यानी चंदूभाई, मन-वचन-काया जो कि शरीर का मिकेनिकल भाग है। स्थूल शरीर पूरा ही मंगलदास में आता है। और जो *पूरण-गलन* (चार्ज-डिस्चार्ज) होता है, वह पूरा भाग मंगलदास में आता है। अब बावा अर्थात् क्या? खुद कुछ देर में कहता है, 'मैं चंदू हूँ।' फिर कहता है, 'मैं इस बच्चे का बाप हूँ। इसका पति हूँ, इसका बॉस हूँ', इस प्रकार जो अलग-अगल विशेषणों के साथ बदलता रहता है, वह बावा है। क्रोध-मान-माया-लोभ भी बावा के है। संक्षेप में स्थूल भाग मंगलदास का, सूक्ष्म भाग और कारण भाग बावा के और 'मैं', शुद्धात्मा। इसमें पूरा अक्रम विज्ञान आ जाता है।

बावा को विलय करने के लिए क्या करना है? यदि बावा के पक्ष में बैठेंगे ही नहीं तो उसकी वंश वृद्धि नहीं होगी। किसी के अपमान करने पर यदि खुद का *उपराणा* (रक्षण) नहीं ले तो बावा खत्म होता है। अब जैसे-जैसे फाइलों का समभाव से *निकाल* (निपटारा) होता जाएगा वैसे-वैसे बावा का विलय होता जाएगा। जब खुद के दोष दिखाई देने लगेंगे तभी बावा जाने लगेगा। जैसे-जैसे बावा का खुद का इफेक्ट ज्ञान से भोग लिया जाएगा वैसे-वैसे बावा, 'मैं' में आता जाता है? 'मैं' बावा को रियालिटी समझता है, उस आधार पर बावा 'मैं' में आता जाता है। प्रज्ञा के रूप में 'मैं' बावा को समझाता है।

सालों से दादाश्री के हृदय की व्यथा थी कि कैसे यह गुह्यतम ज्ञान सभी को समझाऊँ? पहली बार 1987 में अमरीका में 'मैं, बावा और मंगलदास' का रहस्य खोला था और कहा था कि मैं आपको अंतिम प्रकार का ज्ञान दे देता हूँ। अब इससे आगे का कुछ भी जानने का बाकी नहीं रहता। आत्मा तो शुद्ध ही है। अब जैसे-जैसे बावा शुद्ध होता जाएगा वैसे-वैसे विज्ञान प्रकट होता जाएगा! महात्माओं को इस विज्ञान द्वारा खुद के स्व-पद का स्पष्ट अनुभव हो, वही हार्दिक अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

अंतिम विज्ञान -'मैं, बावा, मंगलदास'

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

'मुझे छूटना है', ऐसा कहने वाला कौन है?

प्रश्नकर्ता : मोक्ष में किसे जाना है?

दादाश्री : जो बंधा हुआ है, उसे। जिसे दुःख होता है, उसे।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) को?

दादाश्री : जो पूछ रहा है, उसे। जिसे मुक्त होना है, वह। अब मुक्त किसे होना है? आपको मुक्त होना है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : आप तो अपने आपको मान बैठे थे कि 'मैं चंदूभाई हूँ।' गलत निकला न सारा?

आप अपने आपको मान बैठे थे कि 'मैं चंदूभाई हूँ।' वह जो आप हो, वह मुक्त होना चाहता है। पूछने वाले को ही मुक्त होना है। किसे मुक्त होना है? शादी करने वाला अगर ऐसा पूछे कि 'किसे शादी करनी है?' तब लोग क्या कहेंगे, 'तेरी ही शादी होनी है न!' आप अपने आपको जो कुछ भी मानते हो न, उसी को छूटना है उसे मुक्त होना है। यदि अहंकार को छूटना है तो तू कौन है? पूछने वाला कौन है? पूछते समय ऐसा नहीं कह सकते। यों ही बात करनी हो तो ऐसा लगेगा कि 'भाई अब, अहंकार को मुक्त होना है।' पूछते समय भ्रम होता है। शुद्धात्मा तो बंधा हुआ है ही नहीं न! जो बंधा हुआ है वही मुक्त होने के लिए शोर मचाता है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या अहंकार बंधा हुआ है?

दादाश्री : नहीं तो और कौन? अहंकार चंदूभाई है, अहंकार ही प्रतिष्ठित आत्मा है। जो मानो, वह। वह बंधा हुआ है, दुःख भी उसी को है न! जिसे दुःख है वह मोक्ष में जाने के लिए हाथ-पैर मार रहा है। दुःख से मुक्त होना, वही मोक्ष है। वही सबकुछ है। अन्य कुछ भी नहीं। यह सब रिलेटिव उसी का है।

जिस पर दुःख आ पड़े, वह सुख ढूँढता है। जो बंधा हुआ है, वह मुक्त होना चाहता है। यह सब बंधे हुए के लिए है। इसमें शुद्धात्मा के लिए कुछ भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादा, यदि चंदूभाई को छूटना है और चंदूभाई ही बोल रहा है तो 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह वाक्य किस तरह से आ सकता है, दादा?

दादाश्री : ऐसा भी बोल सकता है न!

प्रश्नकर्ता : तो चंदूभाई कैसे बोल सकता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ?'

दादाश्री : बोलता ही है न! लेकिन वह तो टेपरिकॉर्ड है न! यह उस समय की बात है न, जब वह चंदूभाई था! और अभी तो हम 'मैं'

'यह' हो गए हैं। रियली स्पीकिंग, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', रिलेटिवली स्पीकिंग 'चंदूभाई', उसमें हर्ज क्या है? यह मैं कौन से व्यू पोइन्ट से कह रहा हूँ?

प्रश्नकर्ता : अत: इसमें दोनों व्यू पोइन्ट आ जाते हैं?

दादाश्री : सभी व्यू पोइन्ट्स। कितने सारे व्यू पोइन्ट्स हैं लेकिन इनमें से दो मुख्य हैं। व्यू पोइन्ट तो तीन सौ साठ डिग्रियों के हैं, इस डिग्री पर मैं इसका ससुर हूँ, इस डिग्री पर इसका फादर हूँ, इस डिग्री पर इसका मामा हूँ।

ज्ञानी और भगवान में इतना ही फर्क

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं, 'हम में तीन सौ छप्पन डिग्री का ज्ञान है, लेकिन हमने आप लोगों को तो तीन सौ साठ डिग्री का दे दिया है।' इसका क्या अर्थ है?

दादाश्री : इसका अर्थ इतना ही है कि मुझे तीन सौ साठ का था, लेकिन मुझे पचा नहीं और तीन सौ छप्पन पर आकर कांटा रुक गया। आपको भी नहीं पचा है। वह तीन सौ दस पर है अभी तक, तीन सौ दस-बीस पर है। आपको नहीं पचा है न? तीन सौ साठ दिया था लेकिन तीन सौ बीस पर आ गया, किसी का तीन सौ दस पर आ गया, लेकिन तीन सौ से ऊपर है सब का। जबकि थे दो सौ पर। सौ, एक सौ दस एकदम से पार कर लिया है! ये निर्मल लोग थे इसलिए यह मिल गया, नहीं तो दादा भगवान कहाँ से मिलते?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा! ज्ञानी और भगवान में क्या फर्क है?

दादाश्री : ज्ञानी और भगवान में इतना ही फर्क है कि ज्ञानी समझ सकते हैं, सभी कुछ देख सकते हैं, लेकिन जान नहीं सकते। ये जो दिखाई देते हैं न, वे तो भादरण के पटेल हैं और मैं तो ज्ञानी पुरुष हूँ और दादा भगवान अलग हैं, वे तो परमात्मा ही हैं! चौदह लोक के नाथ हैं।

मेरी तीन सौ साठ डिग्री पूर्ण नहीं हुई हैं और तीन सौ छप्पन पर रुक गया है इसीलिए अंदर जो प्रकट हुए हैं उन भगवान में और मुझमें जुदापन है। यदि मेरा तीन सौ साठ हो गया होता न, तो हम दोनों एकाकार हो जाते। लेकिन अभी यह जुदापन है क्योंकि इतना यह निमित्त होगा न, लोगों का कार्य करने का, इसलिए जुदापन है। अत: जितने समय तक हम भगवान के साथ एक रहते हैं, अभेद भाव में रहते हैं, उतने समय तक संपूर्ण स्वरूप में रहते हैं और जब वाणी बोलते हैं तब अलग (जुदापन) हो जाता है।

पहचान, 'मैं, बावा और मंगलदास' की

प्रश्नकर्ता : यहाँ ज़रा कन्फ्यूज़न हो गया है कि तीन सौ साठ डिग्री वाले दादा भगवान हैं और तीन सौ छप्पन डिग्री पर अंबालाल?

दादाश्री : हाँ, दादा भगवान अंदर हैं, दादा भगवान तीन सौ साठ डिग्री वाले, जो मूल भगवान हैं, वह 'मैं' हैं। 'ये' दादा भगवान नहीं हैं, ये तो अंबालाल पटेल हैं। हम तो ज्ञानी पुरुष हैं।

हम ज्ञानी हैं। ज्ञानियों में क्या होता है? ज्ञानी क्यों कहलाते हैं? अस्सी प्रतिशत, नब्बे प्रतिशत, पचानवे, निन्यानवे प्रतिशत तक ज्ञानी और सौ प्रतिशत पर खुद।

हम एक उदाहरण लेते हैं। रात को बारह बजे कोई आकर बाहर से दरवाज़ा खटखटाता है। तब हम पूछें कि 'अरे भाई, अभी कौन आया है

रात के बारह बजे?' तब वह कहता है, 'मैं हूँ।' हम फिर से पूछें, 'कौन हो भाई, बताओ न?' तब कहता है, 'मैं हूँ, मैं! मुझे नहीं पहचाना?' ऐसा कहता है। तब हम कहते हैं 'नहीं भाई, मुझे समझ में नहीं आया। कौन है?' तब कहता है, 'मैं बावा।' 'बावा (संन्यासी) लेकिन पाँच-सात संन्यासी मेरे परिचित हैं, तुम कौन से बावा हो, मुझे समझ में आना चाहिए ना? हाँ, लेकिन बावा अर्थात् कौन है तू?' तब कहता है 'मैं बावा मंगलदास।' तब वह पहचानता है। जब सिर्फ 'मैं' कहता है तो नहीं पहचान पाता। 'मैं बावा हूँ' कहता है, तब लगता है, 'यह वाला बावा आया या वह वाला बावा आया?' बावा तो चार-पाँच हैं। तब कहता है, 'मैं बावा मंगलदास।' और यदि मंगलदास दो-तीन हों तब ऐसे कहना पड़ेगा 'मैं मंगलदास, महादेव जी वाला।' परिचय तो चाहिए न? अत: जब वह 'मैं, बावा और मंगलदास' इस प्रकार से तीन शब्द कहता है, तब जाकर सामने वाला पहचानता है कि 'हाँ, वह वाला मंगलदास।' उसे तब छवि भी दिखाई देती है। दिखाई देती है या नहीं दिखाई देती? इसलिए जब ऐसा कहा जाए कि 'मैं, बावा और मंगलदास' तब जाकर पहचानता है वह। नहीं तो, वह पहचानेगा कैसे? दरवाज़ा ही नहीं खोलेगा न! उसे खुद को पता चलना चाहिए न, कि कौन है यह? उसी प्रकार अगर इस 'मैं' को पहचान लिया जाए न तो हल आ जाएगा। उसी प्रकार से इसमें जो 'मैं' है, वह 'आत्मा' है, यह 'चंदूभाई' मंगलदास है और 'बावा' अंतरात्मा है।

तो 'मैं चंदूभाई हूँ, मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा इस देह भाग को आप कहते थे। आप किस प्रकार से चंदूभाई हो? क्या चंदूभाई आपका नाम नहीं है? तब आप कहोगे, 'मेरा नाम है।' 'वह तो भाई, तेरा नाम अलग और तू अलग नहीं है?' अलग ही है!

प्रश्नकर्ता : तो ये ए. एम. पटेल, मंगलदास हैं?

दादाश्री : सिर्फ ए. एम. पटेल ही नहीं, लेकिन डॉक्टर जितना भी सब देख सकते हैं, काट-काटकर बारीक से बारीक जो कुछ भी देख सकते हैं, वह पूरा मंगलदास है। अत: इस शरीर में जो फिज़िकल भाग है, वह पूरा मंगलदास है। मंगलदास के ताबे में कितना है? तो कहते हैं, इतना फिज़िकल (भौतिक) और फिर वह भी अपने ताबे में नहीं है। अत: उसका समभाव से *निकाल* (निपटारा) करना है। 'उसकी क्या स्थिति होगी', वह सब व्यवस्थित है। अत: आपको व्यवस्थित समझकर समभाव से *निकाल* करना है!

ज्ञान के बाद ड्रेस वाले बावा का जन्म

प्रश्नकर्ता : जब से आपने ज्ञान दिया तभी से बावा का जन्म हुआ। तब तक तो चंदूभाई ही था।

दादाश्री : हाँ। वर्ना तब तक तो चंदूभाई ही था। फिर बावा बनने लगा। जैसे ब्राह्मण कोई व्यक्ति है तो और यदि तीस-चालीस साल तक शादी करने का कोई ठिकाना न पड़े और उसे किसी जगह पर मंदिर के महंत की तरह रखा जाए और वह महाराज कहलाने लगे तो तभी से बावा बनता है। अर्थात् आप चंदूभाई ही थे, मैं मिला, मैंने आपसे कहा, 'आप शुद्धात्मा हो।' तभी से बावा बने। लोग मंदिर के बावा बनते हैं और हम सब इसमें (अक्रम विज्ञान में) बावा बन गए।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। बस, अब बावा से कहते रहना है, 'तू शुद्धात्मा है, तू शुद्धात्मा है।'

बावा को यही रटते रहना है तो फिर धीरे-धीरे बावा तीन सौ साठ तक पहुँच जाएगा।

दादाश्री : नहीं। ऐसा रटते रहने की ज़रूरत नहीं है। आपको तो 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा ही बोलना है। जब शुद्धात्मा वर्तन में आएगा तब बावापन छूट जाएगा और जब तक वह वर्तन में नहीं आया है, तब तक बावा है। श्रद्धा में 'मैं शुद्धात्मा हूँ' लेकिन वर्तन में नहीं है इसलिए बावा है। जब वह वर्तन एक्ज़ेक्ट हो जाएगा तो वापस श्रद्धा वगैरह सबकुछ एक्ज़ेक्ट।

प्रश्नकर्ता : आपने एक बार कहा था कि 'बावा का जन्म हमारे ज्ञान देने के बाद ही होता है, तब तक बावा नहीं है।'

दादाश्री : नहीं, बावा का जन्म तो जब से यह जानने लगे कि 'मैं कर्ता हूँ' और मुझे मेरे कर्म भुगतने पड़ेंगे, तभी से बावा बन जाता है। लेकिन बावा की एक्ज़ेक्ट ड्रेस नहीं है। एक्ज़ेक्ट ड्रेस तो, ऐसा भान होने के बाद कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ', तब एक्ज़ेक्ट ड्रेस में आता है। वास्तव में यहीं से बावा कहेंगे, बिना ड्रेस वाले को भी बावा कहेंगे। फिर 'मैं चंदूभाई हूँ, विलियम हूँ, सुलेमान हूँ', वह सब मंगलदास है। क्योंकि वह खुद (माना हुआ 'मैं') ऐसा समझता है कि 'भगवान करते हैं और मैं तो चंदूभाई हूँ।'

प्रश्नकर्ता : 'मुझे देहाध्यास रहता है, उससे मुक्त होना है', ऐसा जिसे भान हुआ तभी से वह बावा है।

दादाश्री : देहाध्यास शब्द का भान भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो वह बावा नहीं कहलाएगा?

दादाश्री : वही बावा है, बावा की शुरुआत कही जाएगी। देहाध्यास का भान हो जाए, तब तो फिर वह बड़ा बावा, रौब वाला लेकिन वह कपड़े वाला बावा नहीं है, असल बावा नहीं है। असल बावा तो जब ज्ञान प्राप्त होता है तभी से असल बावा।

प्रश्नकर्ता : ड्रेस वाला बावा?

दादाश्री : ड्रेस वाला, फुल ड्रेस। तब तारीफ करते समय लोग ऐसा कहते हैं कि, 'नहीं भाई, बावा जी आए हैं।' उसे देहाध्यास वाले को शायद बावा कहे या न भी कहे। वह अपने घर में बावा है।

हमारा बावा अलग है। मज़दूरों का भी बावा ही कहा जाएगा। यहाँ का मज़दूर, इन्डिया का मज़दूर बावा है क्योंकि वह समझता है कि 'मेरी स्त्री न जाने कौन से जन्म की बैरी है, कौन से जन्म में बैर बाँधा है। परेशान-परेशान कर दिया है मुझे।' अभी तक भूला नहीं है पिछले जन्म का।

चलिए पहचानते हैं... बावा और मंगलदास को

मंगलदास को आपने पहचाना? चाकू भी मंगलदास को लगता है, जिसे खून निकलता है, वह भी मंगलदास है। दूसरे को क्या झंझट है? मंगलदास को क्यों भूखा मारें?

प्रश्नकर्ता : भूख का जो असर होता है, उसका किसे अनुभव होता है? मंगलदास को या बावा को?

दादाश्री : मंगलदास को तो भूख का कोई परिचय है ही नहीं। बावा ही सबकुछ जानता है। मंगलदास में तो कोई ज्ञान है ही नहीं। अगर इंजन में तेल खत्म हो जाए तो इंजन को पता चलता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं चलता। सही है।

दादाश्री : आत्मा जानने के बाद अगर मंगलदास खा रहे हों तो उनसे कहेंगे, 'खा लो भाई, धीरे-धीरे खाओ। तड़फड़ाहट न हो उस तरह से', तो मंगलदास भी खुश हो जाएगा कि बहुत अच्छे इंसान हैं!

आपका कितना है, बावा का कितना है और मंगलदास का कितना? जो आँखों से दिखाई दे, कानों से सुनाई दे, जीभ से चखा जा सके और जो नाक से सूंघा जा सके, वह सब मंगलदास का है।

प्रश्नकर्ता : मंगलदास?

दादाश्री : जब डॉक्टर काटते हैं, काटने से जिसका पता चलता है, वह भाग मंगलदास है जिसका यों पता नहीं चलता, अनुभव करने वाले को ही पता चलता है, वह सब बावा है। अनुभव करने वाले को क्रोध होता है। जो क्रोध आता है, वह बावा को आता है। मंगलदास को क्रोध नहीं आता।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : क्रोध-मान-माया-लोभ, सब बावा का है! अपने लोग कहते हैं, 'दादा, मैं शुद्धात्मा हो गया लेकिन अभी तक मुझे क्रोध आता है।' मैंने कहा 'क्रोध बावा को आता है। तुझे नहीं आता।' अत: आपको बावा से कहना है कि 'भाई धीरे से काम लो न तो अपना हल आ जाएगा।' लेकिन हो जाने के बाद कहना।

किसी पर चिढ़ जाता है तो समझ जाना और डाँट ले उसके बाद कहना कि 'ऐसा क्यों कर रहे हो? क्या यह अच्छा लगता है आपको?' ऐसा कहने के दो फायदे हैं। एक तो वह ज़रा नरम पड़ जाएगा। अभी तक कोई कहने वाला था ही नहीं न! बेध्यानी में कर रहे थे। दूसरा क्या फायदा है? तो वह, यह है कि हम खुद उससे बिल्कुल अलग हैं। यों अपनी शक्ति बढ़ती जाएगी।

प्रश्नकर्ता : मेरा बावा आज सत्संग में देर से आया है। मेरा बावा पड़ोसी से व्यवहार करने में रह गया।

दादाश्री : उसे डाँटना नहीं है। देर हो गई, फिर भी आया तो सही न! अत: बावा को डाँटना नहीं है। धीरे से कहना, 'जल्दी जाओ। आप तो बहुत शक्ति वाले हो। सब प्रकार की शक्ति वाले!' ऐसा कह सकते हैं उसे। जल्दी जाना हो तब भी, 'आपमें शक्ति है। अपनी शक्तियाँ समेटकर जाओ तो क्या बुरा है?' डाँटेंगे तो विरोध करेगा और हमें डाँटेगा, बल्कि हमें कुछ कह देगा!

डिज़ाइन मंगलदास की, कार्य बावा का

अत : यह जो मंगलदास है, जब तक 'उसे' नाम से पहचानते हैं तब तक वह मंगलदास है। वह खुद भी जानता है कि मैं मंगलदास हूँ, तब तक वह मंगलदास है। बावा, क्रिया के अधीन बावा कहलाता है और मूल रूप से तो 'मैं' ही है। 'मैं' गलत नहीं है। 'मैं' का उपयोग दूसरी जगह हुआ है, वह गलत है!

जो 'मंगलदास' है, वह जीवात्मा है। 'बावा' अंतरात्मा है और 'मैं' खुद परमात्मा है।

जीवात्मा, आत्मा और परमात्मा, अब इनमें जो जीवात्मा है, वह कर्मसहित अवस्था है और वह अहंकार सहित है। जो देहाध्यासरूपी है, वह जीवात्मा कहलाता है और जिसे अहंकार नहीं होता, जीना और मरना नहीं होता, वह आत्मा है।

प्रश्नकर्ता : और फिर परमात्मा स्टेज कौन सी है?

दादाश्री : परमात्मा तो, उसे खुद के स्वरूप का भान हो गया तो आत्मरूप हो गया, और फिर परमात्मापन प्रकट होता ही रहता है। जब 'फुल्ली' प्रकट हो जाता है, तब 'फुल' परमात्मा बन जाता है। यानी जब तेरहवाँ गुणस्थानक पूरा हो गया, केवलज्ञान हो गया, फिर तो 'फुल' परमात्मा ही हो गया!

अर्थात् 'आइ विदाउट माइ' इज़ गॉड, परमात्मा है। 'आइ विद माइ' वह जीवात्मा है। 'आइ विद नॉट माइन' अंतरात्मा है, बावा है।

प्रश्नकर्ता : एक ही व्यक्ति तीन प्रकार से हो सकता है?

दादाश्री : है ही तीन प्रकार से। जब ये लोग कॉलेज में पढ़ते हैं तब ये क्या कहलाते हैं?

प्रश्नकर्ता : स्टूडेन्ट, विद्यार्थी।

दादाश्री : दूसरे दिन जब उसकी शादी हो, तब वही विद्यार्थी जब शादी करने जाता है तो वहाँ उसे क्या कहते हैं? दूल्हा। अरे भाई, विद्यार्थी को दूल्हा क्यों कह रहे हो सभी। तब सब लोग क्या कहते हैं? अरे भाई, अभी तो दूल्हा है। विद्यार्थी तो तब था जब तक वह स्कूल में था, यहाँ पर नहीं है। यहाँ पर तो दूल्हा है और शादी करने से पहले अगर कुछ हो जाए और पत्नी वहीं पर मर जाए, तो फिर क्या होगा? क्या वह दूल्हा रहेगा? बारात के साथ वापस। रिटर्न विद थेन्क्स! अत: जो चीज़ परिस्थिति पर आधारित है, वह बावा है।

बावा अर्थात् यहाँ पर कितने सोलिसिटर बनते हैं। तो बावा ही सोलिसिटर है, बावा ही समधी है। बावा तो सत्संग में कहा जाएगा लेकिन दूसरी जगह पर तो यदि उसका जमाई आए तो क्या वह उसे बावा कहेगा? नहीं। वहाँ पर तो कहता है, 'मैं ससुर हूँ।' संयोगों के अनुसार खुद को जो कुछ बदलना पड़ता है, वह सब बावा में जाता है। जब जमाई आए तब ससुर कहलाते हैं लेकिन ससुर आएँ तो हम उनके जमाई कहलाते हैं। जमाई के मरने पर जो ससुर बना है, उसे उसका आघात लगेगा। उससे आत्मा को क्या लेना-देना?

प्रश्नकर्ता : अर्थात् जैसे संयोग आते हैं उसी अनुसार बावा की बिलीफ बदल जाती है या बावा बदलता है?

दादाश्री : बावा बदलता ही रहता है। जो बदलता रहे वही कहलाता है बावा जबकि नाम वही का वही रहता है। नाम जो है वह विशेषण वाला है। 'यह वह मंगल है, पहचाना, वह लंगड़ा, नहीं?' विशेषण होते हैं उसके, लेकिन मूलत: वह होता है मंगल का मंगल ही। लेकिन भाई वास्तव में कौन है? तब कहता है, जो ऐसा मानता है, 'मैं मंगल ही हूँ', वह 'बावा' है। अत: बावा बदलता रहता है। 'मैं कलेक्टर हूँ, मैं प्रधानमंत्री, मैं प्रेसिडेन्ट ऑफ इन्डिया', वह बदलता रहता है। एक स्टेज में नहीं रहता जबकि मंगलदास जन्म से लेकर आखिर में मरने तक, वही का वही, मंगलदास ही रहता है। 'मैं', आत्मा वही का वही है। इन सारी बलाओं ने जकड़ लिया है। कि समधी हूँ, मामा हूँ, चाचा हूँ। तरह-तरह के पाश हैं ये तो। वकील भी कहलाता हूँ।

वकालतपन, वह बावापन कहलाता है। वही मंगलदास और मैं। इस 'मैं' को पहचानना था।

बावा और मंगलदास को पहचाना तो फज़ीता हो गया। 'मैं' को पहचान लेंगे तो फज़ीता बंद हो गया। ये सब, एक ही हैं।

ऐसा है यह तो! आप चंदूभाई हो? 'हाँ।' तब अगर पूछें, 'लेकिन चंदूभाई कौन से?' तब कहता है 'इंजीनियर।' ओहो! आप चंदूभाई हो और इंजीनियर भी हो। जबकि वह क्या कहता है? 'मैं बावा हूँ।' तो अब 'आप' समझ गए कि इंजीनियर भी नहीं है और चंदूभाई भी नहीं है। 'मैं' शुद्धात्मा हूँ कहा तो अब इस तरफ चला। और मैं कौन? मैं शुद्धात्मा हूँ। मंगलदास नामधारी है, वह इस संसार व्यवहार को चलाता है। खाता है, पीता है, सोता है, उठता है, घूमता-फिरता है।

बावा अर्थात् चाहे कोई भी हो, स्टोर वाला या किसान या नौकर या पुलिस वाला या जो व्यापार करता है, वह। फिर अंदर जो उल्टा-सुल्टा करता है, पिछला डिस्चार्ज करता है और नया चार्ज करता है। यह जो चार्ज और डिस्चार्ज करता रहता है, वह बावा है।

अत: 'मैं, बावा और मंगलदास' है यह जगत्। सभी कहते हैं, 'मैं, बावा, मंगलदास।' अरे भाई लेकिन, वास्तव में तू कौन है? तू क्यों बावा कहलाता है उसका कोई कारण होगा न? कोई कहेगा कि किसान है। 'अरे भाई, किसान क्यों है लेकिन?' तब कहता है, 'मेरी ज़मीन है, बैल हैं, इसलिए किसान हूँ।' और यह जो फौजदार है, वह किसान नहीं कहलाता और जो फौजदारी करता है, वह बावा है। यह उदाहरण अप्रोपिएट (उचित) है?

प्रश्नकर्ता : एक्ज़ेक्ट (यथार्थ) है दादा।

दादाश्री : यह जो शरीर है, वह अंबालाल है। बावा कौन है? यह वही है जो ज्ञानी है और मैं कौन? आत्मा! अत: ये ज्ञानी बावा ही कहलाएँगे न! मैं, बावा, मंगलदास! कोई कहे, 'अरे तीनों एक ही।' तब कहेंगे, 'एक ही।' देखो ये तीनों एक साथ हैं न! कहते हैं न, 'मैं चंदूभाई लोहा बाज़ार वाला।' 'तू एक ही है या आप दोनों अलग हो?' अलग नहीं समझते! वह खाने वाला मंगलदास है। खुद और वह, दोनों अलग हैं लेकिन भान ही नहीं है न! हम कैसे एक शब्द पर से समझ गए कि तीन-तीन हैं। मैं, बावा और मंगलदास। बावा अर्थात् उसका कामकाज, यह जो डिज़ाइन है, वह मंगलदास है।

जिसकी अवस्था बदलती रहती है, वह है बावा

जो संसार की खटपट करता है या फिर जो मोक्ष की खटपट करता है वह बावा है। लेकिन वह बावा है और 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' समझ में आए ऐसी बात है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : फिर वापस हैं एक के एक ही कि मैं, बावा, मंगलदास। मंगलदास, वह 'चंदूभाई' नामधारी है और यह जो सांसारिक है, वह 'बावा' है और आत्मा, 'मैं' है! मैं शुद्धात्मा हूँ और ये सब बावा। 'इसने मुझे गाली दी', तो गाली देने वाला भी बावा और गाली सुनने वाला भी बावा। ये सब खेल, सभी तरह-तरह के रोमान्स। वह बावा है और 'चंदूभाई' मंगलदास है। बावा अर्थात् जो खेल करता है। जहाँ जाए वहाँ पर खेल तो रहता ही है न?

प्रश्नकर्ता : ये सारे खेल बावा ही करवाता है?

दादाश्री : हाँ, बावा करवाता है।

प्रश्नकर्ता : और जब वही बावा कहता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' तो वापस शुद्धात्मा भी बन जाता है।

दादाश्री : हाँ। बन जाता है।

प्रश्नकर्ता : 'आत्मा ऐसा है कि जैसा चिंतवन करता है वैसा ही बन जाता है।' तो क्या वह बात इस बावा की है? बावा वैसा बन जाता है?

दादाश्री : हाँ। खुद जैसा चित्रण करता है, जैसे अगर कहे 'हमें रोमान्स ही करना है' तो वैसा ही बन जाता है। 'हमें मोक्ष में जाना है' तो वैसा बन जाता है। तय करना चाहिए। तूने क्या तय किया है?

प्रश्नकर्ता : मोक्ष में जाना है।

दादाश्री : अब बावा किस भाग को कहते हैं, वह समझ गए न आप? यह साठ साल की, अस्सी साल की, नब्बे साल की, यह सत्तर साल की, बूढ़ी, पढ़ी-लिखी, अनपढ़, विधवा, विवाहित, वह सब बावा में जाता है। जो बेकार है, बरकत नहीं है, वह सब बावा में। बरकत वाला है, वह भी बावा में। सबकुछ बावा। जिसकी अवस्था बदलती रहती है, वह सब बावा है। ठेठ तक, मोक्ष में जाने तक, मैं, बावा और मंगलदास। 'मैं' आत्मा है। 'मैं' जानता है कि बावा कैसा है और कैसा नहीं। नहीं जानता?

प्रश्नकर्ता : सबकुछ जानता है।

दादाश्री : फिर मंगलदास को मंगली मिलती है। मंगलदास और मंगली की शादी होती है। मंगलदास को पहचाना क्या? मंगलदास और मंगली लेकिन दोनों मंगलदास! बावा कौन है? तब कहते हैं, जो मंगलदास के रूप को (बुद्धि) देखती है, वह। अत: मंगलदास के साथ उसका संबंध बनता है। लेना-देना कुछ भी नहीं है और मंगलदास की उत्तेजना बावा में घुस जाती है। उत्तेजना मंगलदास में है, और बावा मान लेता है।

रात को अगर फिर वाइफ के साथ झगड़ा करके सो जाए, तो उसे मन में ऐसा होता है कि 'अब कब मेरे शिकंजे में आएगी।' देखो बावा क्या-क्या करता है?

प्रश्नकर्ता : सभी कुछ करता है।

दादाश्री : बावा को पता नहीं है कि वह यह क्या कर रहा है! उसे भान नहीं है कि इसका क्या रिएक्शन आएगा!

स्त्री है तो भी बावा, पुरुष है तो भी बावा। बूढ़ा है तो भी बावा है, जवान है तो भी बावा, बेटा नंगा घूमे तो भी बावा। पेट में हो तब भी बावा। उदाहरण अप्रोपिएट है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : सही है दादा।

दादाश्री : कौन सी पुस्तक में मिलेगा? यह बुद्धिकला का नहीं है, यह ज्ञानकला का है। बुद्धिकला में आत्मा की कला नहीं आ सकती। अब 'बावा' को पहचान लोगे या नहीं?

प्रश्नकर्ता : पहचान लेंगे।

दादाश्री : 'मैं' जानता है या नहीं जानता?

प्रश्नकर्ता : सबकुछ जानता है।

दादाश्री : 'बावा' कैसा है, कैसा नहीं? फिर अगर 'मैं' 'बावा' बन जाए तो हो चुका! अभी तक आप ऐसे ही थे।

अब मंगलदास कौन है? जो नामधारी था न, यह नाम-रूप, वह सारा फिज़िकल! और इस फिज़िकल के अलावा सूक्ष्म से लेकर अंत तक का बावा।

प्रश्नकर्ता : मन? अंत:करण?

दादाश्री : सबकुछ?

प्रश्नकर्ता : वह बावा में जाएगा?

दादाश्री : सबकुछ बावा में है। जितना मन फिज़िकल (स्थूल) है, उतना इसमें गया और बाकी का जो फिज़िकल नहीं है, वह सारा बावा में जाता है।

प्रश्नकर्ता : फिर, जो क्रोध-मान-माया-लोभ करता है, वह भी बावा है?

दादाश्री : वह सब बावा। क्रोध-मान-माया-लोभ होते हैं तब भी बावा है और क्रोध-मान-माया-लोभ को जीत ले, तब भी बावा। जीत ले तो संयमी कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : बावा ही संयमी कहलाता है?

दादाश्री : हाँ! संयमी अर्थात् वह असंयम नहीं करता, इसलिए वह विशेषण मिला। जिसके विशेषण बदलते रहें, वह बावा है।

'मन', 'बावा' का और 'मंगलदास' का

एक मन बावा का है और एक मन मंगलदास का है। देयर आर टू माइन्ड्स। मंगलदास को जो विचार आते हैं, बावा उन्हें देख सकता है। अत: जिन विचारों को बावा देख सकता है, वह मन बावा का नहीं है और जिस मन को जान नहीं पाता, वह बावा का है। जो उसका खुद का मन है, उसे वह खुद नहीं जान सकता। वह तो, जब कोई समझाए तभी जान सकता है।

प्रश्नकर्ता : तो जब बावा मन में तन्मयाकार हो जाता है, तब उसे वह जान नहीं सकता?

दादाश्री : मन में जो विचार आते हैं, बावा उनमें तन्मयाकार हो जाता है, तब फिर वह मंगलदास बन जाता है और अगला जन्म उत्पन्न होता (मिलता) है। अत: मन साफ नहीं हो पाता लेकिन यदि बावा अलग रहकर देखे और जाने तो मन साफ होता जाता है। अत: मन का उतना नुकसान कम हो गया। लोग कहते हैं कि आत्मा एकाकार हो जाता है लेकिन आत्मा तो बस बात करने तक ही, ये लोग कहते हैं, उतना ही। बावा ही एकाकार होता है। बावा का मन, भाव मन। भाव, वह सब बावा है और जो द्रव्य है, वह मंगलदास है! वह जो भाव मन है, वह खुद की सत्ता में है (अज्ञान दशा में)। यदि लीकेज हो रहा हो तो (क्रमिक मार्ग में ऐसा ही होता है), उसे बंद किया जा सकता है। भाव मन 'लीकेज' है, संयोगों के आधार पर। अब भाव मन का अर्थ क्या है? 'मैं कर्ता हूँ', वहीं से भाव मन की शुरुआत होती है और अगर 'मैं अकर्ता हूँ' तो भाव बंद हो जाएँगे।

स्थूल मन मंगलदास में आता है और सूक्ष्म मन बावा में आता है। जो फिर से जन्म दिलवाता है, वह बावा का मन है। हमने बावा का वह मन निकाल दिया है इसलिए फिर वह स्थूल मन ही काम करता है। हमने उसे देखने का कहा है।

प्रश्नकर्ता : स्थूल मन को देखने वाला भी बावा ही है न?

दादाश्री : देखने वाला बावा ही है न। जो देखता है वह बावा है। उसे जानने वाला कौन है? प्रज्ञाशक्ति। वह बात ठेठ आत्मा तक पहुँच गई। यानी कि 'देखना।' बावा सिर्फ देखने का काम नहीं कर सकता। बावा यदि इस तरह 'देखे' तो वह बावा नहीं है। अत: वहाँ पर प्रज्ञाशक्ति का काम है। देखने और जानने का काम प्रज्ञाशक्ति

करती है। बावा जानता ज़रूर है कि यह जो देख और जान रहा है (आत्म दृष्टि से ज्ञाता-द्रष्टा वह मेरा स्वभाव नहीं है; मैं (बावा) तो सिर्फ इतना जानता हूँ कि 'मंगलदास क्या कर रहा है।'

प्रश्नकर्ता : यदि प्रज्ञा ही देखती और जानती है, तब तो इस बावा का एक्ज़िस्टन्स रहा ही नहीं न?

दादाश्री : लेकिन जब तक प्रज्ञा देखती व जानती है तब तक बावा रहता है। वह प्रज्ञा बावा को भी देखती व जानती है।

प्रश्नकर्ता : आपने अकर्ता पद में रख दिया है उसके बाद क्या बावा मन में तन्मयाकार हो सकता है? फिर कैसे होता है?

दादाश्री : ऐसा है न, फिर खुद की ऐसी मान्यता नहीं रहती कि 'मैं बावा हूँ', इसलिए अकर्ता। अत: अब जो कुछ भी मंगलदास करता है, उसकी ज़िम्मेदारी अपनी नहीं रही क्योंकि उन सब का *निकाल* हो जाएगा। फिर से उसका रिएक्शन नहीं आएगा। अकर्ता बन जाएगा क्योंकि 'वही' कर्ता था, इसलिए रिएक्शन आ रहा था।

प्रश्नकर्ता : मंगलदास चाहे कोई भी क्रिया करे या फिर उसका मन विचार करे लेकिन अब बावा तन्मयाकार नहीं होता न?

दादाश्री : वह तो, बातों में ऐसा कहते हैं। आचरण में ऐसा रहना मुश्किल है न! वह तो धीरे-धीरे, धीरे-धीरे आएगा। इसे तो बहुत दिनों में पहचाना न, तन्मयाकारपन एकदम से जाता नहीं है न!

मूल 'मैं' आत्मा, देखने व जानने वाला

'अब चेतन का भाग कौन सा है? चेतन कौन से भाग में आता है?' 'क्या तीर्थंकर, वही चेतन है?' तब कहते हैं, 'नहीं, तीर्थंकर चेतन नहीं है।' वह कर्म है। नाम कर्म है वह। तब कोई पूछे, 'क्या तीर्थंकर का अवतार चेतन है?' तो कहते हैं, 'नहीं, चेतन नहीं है।' इन सब को जो जानता है वह 'चेतन' कहलाता है। अत: यह दुनिया विदाउट चेतन चलती रहती है। चेतन, सर्कल (सांसारिक अवस्थाएँ) से बाहर खड़ा है। प्योर! उसकी उपस्थिति से ही चल रहा है। उस 'प्योरिटी' का पता हमें कब चलता है? सभी सर्कल्स को पहचान लेने के बाद। सर्कल में मेरापन न रखे तो प्योर हो जाएगा!

प्रश्नकर्ता : *पुद्गल* की सभी अवस्थाएँ 'सर्कल' मानी जाएँगी?

दादाश्री : सभी अवस्थाएँ। लेकिन लोगों को इसका भान ही नहीं है न! चेतन के बिना कैसे चल सकता है यह? पता कैसे चलेगा कि चेतन के बगैर चल रहा है यह? शास्त्र कैसे सीखेंगे? सम्यक् ज्ञान किस तरह से होगा? सम्यक् ज्ञान का मतलब क्या है? सम्यक् दर्शन अर्थात् ऐसी श्रद्धा बैठना कि मैं इन सभी सर्कल्स के बाहर हूँ!

अत: यदि लोगों को और संतों से पूछें, 'इसमें भगवान क्या करते हैं?' तो वे सभी को समझाते हैं कि 'भगवान इन लोगों का भला करते हैं।' जो ऐसा समझाता है, वह भी चेतन नहीं है। वह तो सर्कल है। जो समझाने वाले को भी जानता है। 'मैं तीर्थंकर हूँ' 'जो' ऐसा जानता है, वह 'आत्मा' है। ये जो तीर्थंकर हैं, वे आत्मा नहीं हैं!

यह बात की किसने? चेतन ने नहीं, वह भी बावा ने की है और सुनने वाला भी बावा

है। सर्कल वाला बावा, किसी एक खास सर्कल तक पहुँचने पर उसे पता चलता है कि यहाँ से समुद्र नज़दीक होना चाहिए। जब उसे ऐसा पता चलता है कि 'अब हम सर्कल से बाहर की लेक में आ गए हैं', तब उसे समकित कहते हैं और तब यह श्रद्धा बैठ जाती है। फिर जैसे-जैसे नज़दीक जाते हैं वैसे-वैसे उसे उसका 'ज्ञान' होता जाता है कि वास्तव में यही है। यह सर्कल से बाहर है।

अत: जिसका कोई विशेषण नहीं होता, वहाँ पर मूल 'मैं' है! 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भी विशेषण नहीं है। अभी तो यह शुद्धात्मा भी विशेषण है, आत्मा का शुद्ध स्वरूप! उससे भी आगे जाना है लेकिन यदि शुद्धात्मा बन गए तो भी बहुत हो गया। जो तीन सौ पैंतालीस डिग्री से आगे गया उसे ऐसा नहीं कहना पड़ता कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' उसके बाद आगे जाना है!

बावा स्वरूप की शुरुआत कहाँ से होती है? जो आत्मा के सम्मुख हो गए हैं, जीवात्मा की दशा से निकलकर आत्म सम्मुख हो गए हैं, वे लोग बावा स्वरूप में आते हैं। इसीलिए उसके बाद वे एब्सल्यूट तक जाते हैं। अत: यह बीच वाला... बावा की स्थिति यह है।

प्रश्नकर्ता : बावा जान नहीं सकता?

दादाश्री : वह 'जानने वाला' ही है। वह जानता ज़रूर है लेकिन यह 'जानने वाला' बावा है कि 'यह आत्मा जानता है।' अगर (ऐसा कहें कि) बावा जानता है तो फिर आत्मा रह जाएगा। जब तक ऐसा मिक्स्चर है कि सबकुछ करता है और जानता भी है, तब तक बावा है और जो सिर्फ जानता है, वह आत्मा है। जानने वाला मूलत: आत्मा ही है।

प्रश्नकर्ता : कौन सा आत्मा जानता है?

दादाश्री : जानने वाला आत्मा, शुद्धात्मा। मूल आत्मा तो जो भगवान हैं, वही हैं।

प्रश्नकर्ता : बावा और मंगलदास, क्या शुद्धात्मा ही उन दोनों का ज्ञाता-द्रष्टा रहता है?

दादाश्री : दोनों का क्या? दोनों के अंदर जितने भाग हैं, उन सभी को देखता व जानता है।

प्रश्नकर्ता : क्या बावा सिर्फ मंगलदास का ही ज्ञाता-द्रष्टा रहता है?

दादाश्री : बावा तो ज्ञाता-द्रष्टा रहता ही नहीं है। ज्ञाता-द्रष्टा तो शुद्धात्मा ही है। उसके अलावा अन्य कोई ज्ञाता-द्रष्टा है ही नहीं। इसमें भी सबकुछ देखता है। ये सभी चीज़ें, जो आँखों से दिखाई देती हैं, वे सभी शुद्धात्मा की वजह से दिखाई देती हैं। वर्ना, बावा में तो ऐसा कुछ है ही नहीं, शक्ति ही नहीं है न! बावा तो अंधा है (ऐसा समझना है कि बावा मात्र मानता है कि मैं देखता हूँ और जानता हूँ अत: इस प्रकार से वह देखने व जानने वाला (ज्ञाता-द्रष्टा) बनता है। वास्तव में तो 'मूल आत्मा ही देखने व जानने वाला है' और कर्ता 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' है। जब मंगलदास साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स के आधार पर करता है, तब बावा मानता है कि मैं कर रहा हूँ। इस प्रकार बावा कर्ता और ज्ञाता दोनों ही बनता है, मान्यता के आधार पर।)

मैं, बावा और मंगलदास, तीन बातें समझ जाए तो सब समझ में आ जाएगा कि मंगलदास कौन है? मैं कौन हूँ और बावा कौन है? अब मंगलदास तो दीये जैसी साफ-साफ बात है। जो

बाहर दिखाई देता है, वह कौन है? तो वह है मंगलदास। जिसकी हड्डियाँ दिखाई देती हैं वह कौन है? तो वह है मंगलदास। जो दिखाई नहीं देता, वह बावा है।

प्रश्नकर्ता : यह जो भूख लगती है, प्यास लगती है, वे ऐसी चीज़ें नहीं हैं कि देखी जा सकें। अंदर जो होता है, वह अपने आप ही होता है। तो वह किसे होता है और उसे कौन देख सकता है? आपने ऐसा कहा था कि 'हम जब भोजन करते हैं तो सबकुछ देख सकते हैं। भोजन पचता है, उसे भी देख सकते हैं। हम सबकुछ अपने से बिल्कुल अलग-अलग देख सकते हैं', तो ऐसा कैसे दिखाई देता है, कौन देख सकता है? इसमें ज्ञाता-द्रष्टा कौन है?

दादाश्री : अरे, आत्मा के सिवा कोई भी वस्तु ज्ञाता-द्रष्टा नहीं हो सकती।

'मैं' प्रज्ञा के रूप में समझे बावा-मंगल को

प्रश्नकर्ता : मंगलदास की फोटो तो एक्ज़ेक्ट ली ही जा सकती है। बावा भी दिखाई दे, ऐसा है न?

दादाश्री : वह यों स्थूल रूप से नहीं दिखाई देता।

प्रश्नकर्ता : यानी वह समझा जा सकता है? बावा का पद ऐसा है कि समझ में आ जाता है?

दादाश्री : वह केवलज्ञान में दिखाई देता है और तीन सौ छप्पन तक समझ में आता है, तीन सौ उनसठ तक। तीन सौ छप्पन तक कुछ समझता है, तीन सौ सत्तावन हो जाएँ तो कुछ और ज़्यादा समझता है, तीन सौ अठावन पर बढ़ जाता है, और तीन सौ उनसठ पर और ज़्यादा बढ़ता है और साठ पर पूर्ण हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : बाकी बारस, तेरस और चौदस, पूनम के दिन पूनम हो जाती है। पूनम तीन सौ साठ पर, चौदस के बाद।

प्रश्नकर्ता : कैमरे से मंगलदास की फोटो ली जा सकती है। उसे देखा जा सकता है, तो क्या बावा को भी देखा जा सकता है?

दादाश्री : मंगलदास, वह फिज़िकल है। बावा फिज़िकल नहीं है फिर भी फिज़िकल है लेकिन दिखाई नहीं दे, ऐसा फिज़िकल है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् ज्ञान से समझ में आ सकता है कि यह बावा का ही पद है।

दादाश्री : वह समझ में आता है। वह दर्शन में आता है, समझ में आया इसका मतलब दर्शन में आ गया। यदि दर्शन में नहीं आया है तो उसे अदर्शन कहा जाता है।

प्रश्नकर्ता : यह मंगलदास का पद है, यह बावा का पद है, ऐसा कौन समझता है?

दादाश्री : 'मैं।'

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा के रूप में?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : ये बाहर की, व्यवहार की अवस्थाएँ वगैरह सब कौन देखता है? वह सारा मंगलदास देखता है या बावा?

दादाश्री : मंगलदास देखता है लेकिन यदि देखने वाले बावा की इच्छा होगी तभी दिखाई देगा, नहीं तो वर्ना नहीं दिखाई देगा।

प्रश्नकर्ता : उस बावा की जिसमें इच्छा है, इन्टरेस्ट है।

दादाश्री : देखने वाला (बावा) होना चाहिए। ये तो चश्मे हैं। मंगलदास चश्मे जैसा है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यह सब देखने वाला बावा है?

दादाश्री : हाँ! देखने वाला बावा है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर अच्छा-बुरा करने वाला भी बावा है?

दादाश्री : बस! नहीं तो और कौन?

प्रश्नकर्ता : और जो बावा को जानता है कि बावा ने यह सब किया, वह हम खुद, 'मैं।'

दादाश्री : 'मैं' सभी कुछ जानता है। 'मैं' मंगलदास को भी जानता है और इस बावा को भी जानता है, सभी को जानता है।

प्रश्नकर्ता : जगत् के लोगों को अर्थात् जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया है उनमें किस प्रकार से है यह सारा? बावा का पद और मंगलदास का पद है ही? क्या उनमें 'मैं' है? उनकी समझ में तीनों पद होते हैं या उन्हें पता नहीं होता?

दादाश्री : सभी कुछ है उनमें। उनकी समझ में नहीं होता। ज्ञान के बाद ही समझ में आता है।

अहंकार ही बावा है

प्रश्नकर्ता : यह जो अहंकार ज्ञाता भाव से और कर्ता भाव से रहता है, तो बावा का भी ऐसा ही कोई कार्य है न, दादा? अहंकार और बावा में क्या फर्क है?

दादाश्री : अहंकार ही बावा है न! बावा में मुख्य चीज़ अहंकार ही है। जिसमें अहंकार कम है, वह भी बावा है। कम अहंकारी है। जिसमें अहंकार खत्म हो गया है, वह भी बावा है।

प्रश्नकर्ता : तब फिर बावा का अस्तित्व ही खत्म हो गया न?

दादाश्री : नहीं।

प्रश्नकर्ता : या फिर बावा निर्अहंकारी पद में रहता है?

दादाश्री : हमारा चार्ज करने वाला अहंकार ही खत्म हो चुका है। हमारा 'मैं' 'अहंकार' खत्म हो चुका है, लेकिन यह बावा अभी तक अहंकारी है, तीन सौ छप्पन वाला। अत: डिस्चार्ज अहंकार रहता है, नहीं तो संडास भी न जा पाए।

प्रश्नकर्ता : दादा, इस हिसाब से, तीर्थंकरों में डिस्चार्ज अहंकार भी खत्म हो चुका होता है, तो उनका बावा भी खत्म हो चुका है?

दादाश्री : हाँ, फिर उन्हें कुछ भी नहीं करना पड़ता।

प्रश्नकर्ता : खाना-पीना, संडास, अन्न कुछ भी नहीं?

दादाश्री : उनका खाने-पीने का अलग तरह का होता है, खिलाने वाले अलग हैं, सबकुछ अलग होता है। कितने ही काम शरीर ही करता रहता है। खिलाने वाले-पिलाने वाले अलग होते हैं, अंदर चलाने वाले अलग होते हैं। ठेठ मोक्ष तक पहुँचाने वाले भी अलग होते हैं।

बावा से बनती है प्रकृति

प्रश्नकर्ता : दादा, कई बार ऐसा होता है

कि हम एक समझ के अनुसार चल रहे होते हैं अब वह समझ तो बावा की है कि 'भाई, पंखे की हवा नहीं खानी चाहिए', लेकिन फिर किसी संयोग की वजह से वापस उसकी बिलीफ बदल जाती है कि 'नहीं, पंखे की हवा खाना तो बहुत अच्छा है।' अर्थात् इस प्रकार बाद में उसकी बिलीफ बदल जाती है। तब वापस प्रकृति को यह पंखा अच्छा लगने लगता है।

यह जो प्रकृति बनती है और प्रकृति इफेक्ट में आती है, उसके पीछे मूलभूत कारण तो बावा को जो ज्ञान प्राप्त हुआ है, वही है न?

दादाश्री : बावा से ही प्रकृति बनती है। बावा ही प्रकृति बनाता है। प्रकृति, प्रकृति को नहीं बनाती। पहले बावा ने बनाई थी। तो उससे यह कुछ भाग प्रकृति बन गया और बाकी का बावा के पास रहा। ज्ञान से, जो ज्ञान के संयोग मिलते हैं, उससे जितना चेन्जेबल होता है, वह बावा के पास रहता है और जितना चेन्जेबल नहीं होता, वह प्रकृति में रहा।

प्रश्नकर्ता : एक्ज़ेक्ट ऐसा ही है! अब बावा के पास वाला ज्ञान चेन्जेबल है?

दादाश्री : ज्ञान हमेशा चेन्जेबल ही होता है। चाहे बावा के पास हो या किसी के भी पास हो। ज्ञान अर्थात् अज्ञान और अज्ञान एक प्रकार का ज्ञान है। अंत में सभी का समावेश ज्ञान में ही हो जाता है। अज्ञान-ज्ञान, अर्धदग्ध ज्ञान, अर्धदग्ध अज्ञान सभी का समावेश ज्ञान में ही हो जाता है और ज्ञान ही इन सब को बदलता है और जो प्योर ज्ञान है, वह तो भगवान ही है। बाकी सब इससे निम्न स्तर पर है, उस कारण से भेद पड़े कि। यह बावा, ज्ञान भी बावा का है, और अज्ञान भी बावा का है।

बावा समझाता है, मंगलदास करता है

(आपका) बावा (ज्ञानी) बावा के पैर की (मालिश) कर रहा है। मैं वह देखता हूँ और जानता हूँ। आप सिर्फ देखते हो। बस, इतना ही। समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : यह पैर मंगलदास का नहीं है?

दादाश्री : मंगलदास क्या करता है, उसे आप देखते हो।

प्रश्नकर्ता : तो पैर मंगलदास का हुआ न?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : और मालिश करने वाला भी मंगलदास ही है न? मंगलदास का पैर है और मालिश करने वाला भी मंगलदास ही है।

दादाश्री : इसमें सब बाँटा हुआ है। यह तेरा काम, यह मेरा काम, हम सभी एक ही हैं। मैं जैसा कहूँ, तुम उसी तरह से करो। मैं तुम्हें समझाता हूँ।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् क्या बावा समझाता है?

दादाश्री : सभी बातें बावा ही समझता है।

प्रश्नकर्ता : और यह मंगलदास करता रहता है।

दादाश्री : वर्ना तो समझ ही नहीं है न!

बावा का समभाव से निकाल होते ही शुद्ध

चंदूभाई की बात करो। कौन बात करेगा? (टेप रिकॉर्डर) व्यवस्थित (के ताबे में है), बावा नहीं है। जानने वाला कौन है? मैं हूँ। अब बातें करो।

यह जो स्थूल चंदूभाई है, वह मंगलदास

है। फिर जो सूक्ष्म भाग बचा और कारण भाग बचा, वे दोनों बावा के हैं और 'मैं', शुद्धात्मा। मैं, बावा, मंगलदास। यह है अपना पूरा विज्ञान, अक्रम विज्ञान! इस बावापद का *निकाल* करना है। जिस बावापद को लेकर आए हैं न, उस बावापद का *निकाल* करेंगे तो शुद्ध हो जाएँगे लेकिन अभी तक चंदूभाई तो साथ में ही है न? और इंजीनियर भी साथ में है न! उनका समभाव से *निकाल* करना है। मंगलदास और बावा, दोनों अलग हैं और मैं अलग हूँ। तुझे उसे पड़ोसी के रूप में तो साथ में रखना पड़ेगा न! *निकाल* तो करना पड़ेगा न! पड़ोसी से झगड़ा थोड़े ही चल रहा है?

प्रश्नकर्ता : समभाव से *निकाल* तो चंदूभाई को करना है न?

दादाश्री : वही चंदूभाई!

प्रश्नकर्ता : यानी समभाव से *निकाल* बावा का नहीं, चंदूभाई का करना है?

दादाश्री : इस इंजीनियर को करना है। यह चंदूभाई ही इंजीनियर है न! चंदूभाई इंजीनियर को करना है। वह सिर्फ चंदूभाई नहीं है, वह तो इंजीनियर भी है। समभाव अर्थात् मित्रता नहीं और दुश्मनी भी नहीं। यह (चंदूभाई) अपना दुश्मन नहीं है। उसे तो हमने ही बनाया है। हमने बनाया है न? भूल तो अपनी ही है न?

मैं, बावा और मंगलदास समझ में आ गया, ठीक से? तेरा भी बावा है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। बावा का ही *निकाल* करना है न!

दादाश्री : बावा कैसा है, उसे तू नहीं जानता? बावा का स्वभाव कैसा है? जानकार जानता है। बावा स्वभाव के अनुसार करता रहता है और जानकार जानता है कि इसने यह ऐसा किया।

प्रश्नकर्ता : अब बावा को शुद्ध करते रहना है न?

दादाश्री : हाँ, वर्ना छोड़ेगा नहीं न! दावा करेगा। हाइकोर्ट में दावा दायर कर लेगा तो फिर क्या होगा? हमें सब आता है। छूटना भी आता है और बंधना भी आता है। जब बंधते हैं तो अज्ञान से बंधते हैं। बंधने से फायदा नहीं होता इसलिए वापस छोड़ देते हैं।

अब इसके साथ *निकाल* तो करना है। उस बावा को खुश करना पड़ेगा। अगर कुछ अच्छा खाने को नहीं मिले न, तो पूरी रात जागता है। अगर बावा को पहचान लेंगे तो फिर हम बावा नहीं रहेंगे।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : बावा को अच्छा खाने की आदत नहीं डालेंगे तो फिर परेशानी नहीं होगी। पहले तो बावा बनकर अच्छा खाने की आदत हो जाती है। वह आदत तो बल्कि बढ़ती जाती है। अब बावा से बाहर निकलकर हम इस 'मैं' में आ गए हैं!

'मंगलदास' पर क्या असर?

प्रश्नकर्ता : यह बावा जब तीन सौ पैंतालीस डिग्री से आगे पहुँचता है तब मंगलदास में क्या परिवर्तन होता है?

दादाश्री : मंगलदास में कोई परिवर्तन नहीं होता। वह तो अपनी प्रकृति में ही रहता है। परिवर्तन होता रहता है, इस बावा में ही और 'मैं' सिर्फ देखता रहता है।

प्रश्नकर्ता : इस बावा में किस आधार पर परिवर्तन होता है?

दादाश्री : इफेक्ट के आधार पर।

प्रश्नकर्ता : मंगलदास के इफेक्ट के आधार पर? बावा को कौन बदलता है? अर्थात् यह ज्ञान या बाहर का असर? बावा किस आधार पर बदलता है?

दादाश्री : इफेक्ट के आधार पर। (ज्ञान से जितना इफेक्ट भोग लिया उतना ही बावा आगे बढ़ता है, ऐसा समझना है)

प्रश्नकर्ता : इफेक्ट मंगलदास का?

दादाश्री : भला मंगलदास का इफेक्ट होता होगा?

प्रश्नकर्ता : तो?

दादाश्री : जो उसे भुगतता है, उसका। मंगलदास अपना खुद का इफेक्ट भोगता है। बावा अपना भोगता है।

प्रश्नकर्ता : तीन सौ पैंतालीस पर से तीन सौ छियालीस पर आता है, तीन सौ सैंतालीस पर आता है तो वह किस आधार पर आता है?

दादाश्री : जितना वह (ज्ञान में रहकर) भोग लेगा, उतना ही इसमें आ जाएगा। अर्थात् जितना 'मैं' में आएगा उतना बढ़ेगा।

प्रश्नकर्ता : बावा 'मैं' में चला जाता है?

दादाश्री : नहीं तो फिर कौन जाता है? वह तीन सौ छप्पन वाला बावा बढ़ते-बढ़ते तीन सौ साठ का हो जाएगा। उनसठ तक बावा है और साठ पर पहुँचा तो वह खुद है!

प्रश्नकर्ता : और 'मैं' तो तब था ही, रहता ही है?

दादाश्री : 'मैं' तो रहेगा ही न!

प्रश्नकर्ता : तो क्या ऐसा होता है कि यह 'मैं' बावा को कुछ समझाता है?

दादाश्री : होता है न! (यहाँ पर ऐसा समझना है कि 'मैं' प्रज्ञा के रूप में काम करता है)

प्रश्नकर्ता : और वह समझने पर बावा 'मैं' के पास आता है, क्या ऐसा होता है?

दादाश्री : हाँ, उस समझ से ही आता है न! और क्या?

प्रश्नकर्ता : तो फिर यह सब क्या है? अगर बावा को प्रगति करनी हो तो बीच में क्या आता है?

दादाश्री : और कौन सी प्रगति करनी है? जितना यह 'मैं' बताए उतना ही। 'मैं' के पास शब्द नहीं होते।

प्रश्नकर्ता : 'मैं' के पास शब्द नहीं होते? तो वह किस तरह से समझाता है उसे?

दादाश्री : यह तो, वह जो शक्ति है न, प्रज्ञाशक्ति, वह 'मैं' का भाग है, प्योर ही है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : लेकिन उसकी संज्ञा से ही यह हो जाता है, शब्द नहीं हैं, उसकी उपस्थिति से ही यह सब चलता है। अगर वह नहीं होगा तो यह सब नहीं चल पाएगा। बावा आगे बढ़ेगा ही नहीं, नीचे गिर जाएगा लेकिन चढ़ेगा नहीं।

प्रश्नकर्ता : क्या प्रज्ञा उसे चढ़ा देती है?

दादाश्री : प्रज्ञा की वजह से ही चढ़ता जाता है और प्रज्ञा की गैरहाज़िरी में गिर जाता है। जागृति गई कि नीचे गिरा। मैं जो कह रहा हूँ, वह काम आएगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। बात तो बहुत स्पष्ट है, एकदम। क्लियर समझ में आ जाए, ऐसी है। अब इसमें मंगलदास को जो इफेक्ट आता है तो बावा पर उसका कितना असर होता है?

दादाश्री : मंगलदास खुद अपना इफेक्ट भुगतता है और अगर खुद का इफेक्ट न हो और बावा का हो तो बावा भुगतता है।

प्रश्नकर्ता : अथवा बावा का इफेक्ट मंगलदास पर आता है?

दादाश्री : इफेक्ट तो आमने-सामने आता जाता है, लेकिन उसका खुद का अर्थात् खुद का ही। यदि तेरी इच्छा हो, तब भी मंगलदास नहीं बदलेगा। बावा की इच्छा हो कि मंगलदास में ऐसा परिवर्तन हो जाए तो परिवर्तन नहीं होगा और मंगलदास की इच्छा हो तब भी इस बावा में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

'मैं', 'बावा' और 'मंगलदास', यह कौन समझता है?

प्रश्नकर्ता : लेकिन उस ज्ञान की ज़रूरत है जो ज्ञान बावा को 'मैं' में बिठा दे? अंतिम ज्ञान...

दादाश्री : नहीं, वह समझता है कि यह चंदूभाई मैं ही हूँ। कहता है, 'वही हूँ न मैं।' इसलिए अभी भटकना पड़ा। और जो कहता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' तो वह प्योर हो जाता है, फिर कोई परेशानी नहीं। खुद प्योर ज्ञान को ही, 'मैं हूँ', ऐसा कहता है। प्योर ज्ञान, थ्री हंड्रेड सिक्स्टी डिग्री पर से ही 'मैं हूँ', वह मान्यता है। वहाँ से जितना आगे आएगा, तीन सौ पैंतालीस डिग्री पर आ जाए तभी से वह ज्ञानी पुरुष कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : अब बावा स्थिति का शुद्ध होना, उसमें फिर मंगलदास चाहे कैसा भी हो सकता है?

दादाश्री : मंगलदास से हमें क्या लेना-देना? मंगलदास की डिज़ाइन तो बदलेगी ही नहीं! इफेक्ट हो गया है। डिज़ाइनेबल (अन्चेन्जेबल) इफेक्ट हो चुका है। वह शुरुआत में जन्म के पहले से हो चुका है। वह नहीं बदलेगा, यह बदल सकता है।

प्रश्नकर्ता : बावा के पास जितना अज्ञान है, उतना ही उस पर असर होता है न?

दादाश्री : उतना ही।

प्रश्नकर्ता : और अगर वह विज्ञान में आ जाए तो असर नहीं होने देगा?

दादाश्री : तीन सौ साठ वाले को तो होगा ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : नहीं होगा। अत: वास्तव में ऐसा है कि मंगलदास का असर बावा पर नहीं हो सकता। इसकी (बावा की) जितनी नासमझी है उतना असर मंगलदास पर होता है।

दादाश्री : वर्ना असर होगा ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। और आप जो बात कर रहे हैं न, आप उस प्योर ज्ञान की बात कर रहे हैं कि बावा को एक भी असर स्वीकार नहीं करना है।

दादाश्री : फिर?

प्रश्नकर्ता : अर्थात् ऐसा है कि आपका जो बीच वाला यह बावा का पद है, उतना उसकी (बावा की) समझ में है। केवलदर्शन है अर्थात् बावा को पूरा, एकदम प्योर दर्शन मिल गया है इसलिए मंगलदास पर होने वाला कोई भी असर आपको स्पर्श ही नहीं करता।

खुला रहस्य अक्रम विज्ञान के द्वारा

यह तो जितनी बात निकले उतना ही ठीक, वर्ना तो निकले ही नहीं न। दृष्टि के बिना नहीं निकल सकती कभी भी। यह सब तो मैं आपके लिए बता रहा हूँ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अक्रम विज्ञान ने अंतर का पूरा रहस्य ज्ञान खोल दिया है।

दादाश्री : कभी खुला ही नहीं था। इसमें तो अंत तक एक-एक कदम चले हैं।

प्रश्नकर्ता : इन शास्त्रों में या कोई दूसरा अंदर की ऐसी बातें नहीं बता सका है।

दादाश्री : हो ही नहीं सकता न, जानेगा ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : आत्मा है और बाकी सब *पुद्गल* है। बस!

दादाश्री : अंत तक यही है और जब जान लेते हैं तब ऐसा बताते नहीं है। ऐसा तो मैंने बताया ही नहीं कभी, यह तो आज ही बताया है क्योंकि हम संपूर्ण दशा में रहते हैं। अकेले में तीन सौ साठ पर। दो में नहीं रहते। तीन सौ छप्पन के दर्शन होते हैं और तीन सौ साठ पर हम रहते हैं इसीलिए दर्शन करने वालों को बहुत फायदा है! अभी बात करते समय इतना फायदा नहीं होता।

356 पहुँचने में रुकावट, 'मैं कुछ हूँ'

प्रश्नकर्ता : अब, आपको पचास साल की उम्र में जब ज्ञान हुआ था तब आप थ्री फिफ्टी सिक्स डिग्री पर पहुँच गए। लेकिन जब ज्ञान नहीं हुआ था, उनपचास साल की उम्र में, तब आप कहाँ थे?

दादाश्री : ज्ञान से पहले हमारी बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट टु सिक्सटी फाइव डिग्री थी। रिलेटिव में टु सिक्सटी फाइव डिग्री थी और 'नियर रियल' थ्री फोर्टी फाइव थी।

रियल थ्री हंड्रेड सिक्सटी डिग्री होता है लेकिन अभी 'ये' यहाँ (356 डिग्री) तक पहुँचे हैं। अब यह नज़दीक है, इसलिए बता रहे हैं कि कौन सी डिग्री पर हैं। अब कुछ समय बाद रियल तक पहुँच ही जाएँगे। यह इफेक्ट बचा है। बाकी रियली में तो कॉज़ में ये (360 वाले) हो ही चुके हैं। रियली पहुँच चुके हैं। हमारा रिलेटिव आया है।

प्रश्नकर्ता : आपको थ्री फिफ्टी सिक्स डिग्री तक पहुँचने में सब से बड़ी रुकावट या वीकनेस क्या थी?

दादाश्री : इगो, इगोइज़म, ऐसा था कि 'मैं कुछ हूँ!'

तीन सौ तीन डिग्री तक पहुँचा था, वह बावा। बावा की शुरुआत यहाँ से हुई। पहले कितना था, जब चंदूभाई था तब?

प्रश्नकर्ता : दो सौ दो डिग्री, आपने समझाने के लिए बहुत अच्छा शब्द कहा है कि चंदूभाई की दो सौ दो डिग्री है, तीन सौ साठ शुद्धात्मा की अर्थात् रियल की और तीन सौ तीन डिग्री

किसकी? ऐसा कहा कि तो वह नियर रियल की।

दादाश्री : नियर रियल। फिर एक सीढ़ी हो या दस सीढ़ियाँ लेकिन नियर रियल।

इसमें यह दुनियादारी का उदाहरण सिर्फ आपको समझाने के लिए बताया है। जब तक आप चंदूभाई थे और डॉक्टर थे, तब तक ऐसा था कि 'मैं चंदूभाई डॉक्टर हूँ।'

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : फिर मैंने कहा कि 'नहीं! चंदूभाई डॉक्टर है लेकिन बाइ बॉडी वगैरह से, फिज़िकल में। अब आप शुद्धात्मा हो।' तब 'आपको' शुद्धात्मा, और 'मैं चंदूभाई' का ऐसा पद। आपको ऐसा पता चलने लगा तब मैंने कहा कि 'नहीं, शुद्धात्मा बन नहीं गए हो, बन रहे हो' और यह बीच वाली, बावा की स्टेज दी।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। बीच वाली बावा की स्टेज दी। हाँ, समझ में आ गया।

कौन सी डिग्री से, ज्ञानी पद - भगवान पद है?

दादाश्री : जो मंगलदास को, बावा को, सभी को जानता है, वह 'मैं' है। जो तीन सौ साठ डिग्री वाला ज्ञानी है, उसे 'मैं' कहता हूँ लेकिन जो ज्ञानी हैं, वह 'मैं' नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यह बावा 'मैं' नहीं है?

दादाश्री : नहीं, 'ज्ञानी' भी 'मैं' नहीं हूँ लेकिन 'मैं' सभी को जानता हूँ। जो तीन सौ साठ डिग्री वाला 'ज्ञानी' है, उसे भी जानता हूँ।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कौन कहता है? 'मैं'?

दादाश्री : 'मैं' कहता है।

प्रश्नकर्ता : और बावा?

दादाश्री : जो ऐसा कहता है कि 'मैं तीन सौ साठ डिग्री वाला ज्ञानी हूँ।'

प्रश्नकर्ता : तीन सौ साठ डिग्री बोलता है?

दादाश्री : हम नहीं कहते, 'बावा' बनकर, 'मैं तीन सौ छप्पन डिग्री वाला ज्ञानी हूँ?'

प्रश्नकर्ता : जो ऐसा कहता है कि मैं तीन सौ उनसठ डिग्री वाला ज्ञानी हूँ, क्या वह भी बावा है?

दादाश्री : वह बावा है।

प्रश्नकर्ता : जो उसे जानता है, वही?

दादाश्री : वह मूल है।

प्रश्नकर्ता : मूल को 'मैं' कहा है?

दादाश्री : वह मूल 'मैं' है। जहाँ शब्द नहीं पहुँच सकते, वहाँ पर 'मैं' है। फिर भी सब उसी में से उद्‌भव होता है। तुझे बावा दिखाई देता है न? बावा के खत्म होने के बाद वह मूल के साथ अभेद हो जाता है। तब फिर यह बावा खत्म हो जाता है! बावा और मैं, दोनों के बीच जो पर्दा है, जब वह पर्दा निकल जाएगा तब वह 'मैं' बन जाएगा।

प्रश्नकर्ता : वह कौन सा पर्दा है?

दादाश्री : वही पर्दा है, सिर्फ मूल *चोंट* (चिपका हुआ है, मान्यता) है, दरअसल *चोंट*। वह *चोंट* निकल जाए तो खत्म हो जाएगा। उस पद को आने में देर ही नहीं लगेगी।

प्रश्नकर्ता : वह पद कब आएगा, दादा?

दादाश्री : तीन सौ साठ डिग्री पूरी हो जाने पर।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है न, कि तीन सौ उनसठ तक बावा है और तीन सौ साठ हो जाने पर बावा खत्म।

दादाश्री : फिर तो भगवान बन जाता है! तीन सौ उनसठ तक वह ज्ञानी है। तीन सौ पैंतालीस से लेकर लगभग तीन सौ उनसठ तक वह ज्ञानी कहलाता है लेकिन यह सब बावा में ही आता है।

हमने सभी स्टेशन देखे हैं। आपको भी सभी स्टेशन देखने पड़ेंगे।

'मैं केवलज्ञान स्वरूप, जैसा शुद्धात्मा हूँ।'

हमें 'दादा भगवान' के दर्शन करने हैं (शीशे में देखकर बोल रहे हैं) ये जो देहधारी दिखाई दे रहे हैं, वे दादा भगवान हैं! ऐसा है न, तीन सौ पचपन डिग्री से तीन सौ साठ डिग्री तक सब भगवान ही कहलाते हैं!

प्रश्नकर्ता : अत: इस तरफ बावा तीन सौ पैंतालीस या तीन सौ पचास हो और दूसरी तरफ 'मैं' तीन सौ साठ हो, तो क्या इस प्रकार से एट ए टाइम दोनों हो सकते हैं?

दादाश्री : है न! हमारा वही है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् बावा तीन सौ छप्पन पर है।

दादाश्री : बावा तीन सौ छप्पन डिग्री पर है।

प्रश्नकर्ता : और आप तीन सौ साठ पर।

दादाश्री : 'मैं' तीन सौ साठ पर और तीर्थंकरों में दोनों ही तीन सौ साठ।

प्रश्नकर्ता : केवलियों में भी दोनों तीन सौ साठ?

दादाश्री : केवलियों में दोनों तीन सौ साठ हों या न भी हों, लेकिन तीर्थंकरों में तो दोनों तीन सौ साठ।

360 और 356 में, भेद

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकरों की तीन सौ साठ डिग्री और आपकी तीन सौ छप्पन डिग्री, वह भेद समझाइए।

दादाश्री : तीन सौ साठ वाले ऐसा नहीं कहते कि 'चलो आपको मोक्ष दूँ।' और देखो! मैं तो खटपट करता हूँ न, 'चलो मोक्ष देता हूँ।' ओहोहो, आए बड़े मोक्ष देने वाले! जब संडास नहीं आती तब जुलाब लेना पड़ता है! यह तो ऐसा है न, कि जो ऐसा कुछ भी नहीं कहते, वे वीतराग हैं और हम खटपटिया वीतराग हैं।

हमारा नाम अंबालाल ही रहा, लेकिन हम बावा में से निकल गए हैं और ज़रा सा बावापन बचा है इसलिए यह खटपट करते रहते हैं। खटपट किसलिए है? तो वह इसलिए कि 'जो सुख मैं भोग रहा हूँ वैसा ही सुख आपको भी मिले।'

अब जीवन बहुत सुंदर तरीके से बिताना है। अभी अपने साथ जो बावा है उससे कह देना है कि 'जीवन ऐसे बिताओ, जैसे अगरबत्ती।' अगरबत्ती जीवन बिताती है तो उसका क्या काम है? खुद जलकर दूसरों को सुख देना। अत: उसकी ज़िंदगी बेकार नहीं जाती! अच्छी, साफ-सुथरी बीतती है। अगरबत्ती की तरह, यह समझाना है। अगरबत्ती जैसे बन सकते हैं, ऐसा है। ऐसा सब माल है और सुगंधि वाले इंसान हैं। अन्य कुछ भी नहीं चाहिए, दुनिया की कोई चीज़ नहीं

चाहिए लेकिन यह भी भाव ही है न! जब तक भाव है तब तक यह डिग्री कम है। जब तक कोई भी भाव है तब तक संपूर्ण वीतराग नहीं हैं। अत: हमारी चार डिग्री कम हैं। जबकि वे (केवलज्ञानी) तो कुछ भी नहीं कहते। बिल्कुल उल्टा हो रहा हो और वे देखते हैं कि यह उल्टा हो रहा है तब भी नहीं बोलते। एक अक्षर भी नहीं बोलते, वीतराग। आप लोगों के काम आते हैं ये खटपटिया।

प्रश्नकर्ता : दादा, तीन सौ सत्तावन, अठावन और उनसठ का क्या है फिर?

दादाश्री : वह तो फिर डिग्री बढ़ती जाती है न, वह दशा और भी उच्च प्रकार की होती है। वह दशा बहुत उच्च है।

प्रश्नकर्ता : हमें ज़रा समझ में आए ऐसा कुछ बताइए न?

दादाश्री : वह (स्थिति) जैसै-जैसे आएगी न, तब समझ में आ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : तीन सौ साठ वाले को यह जगत् कैसा दिखाई देता है?

दादाश्री : कोई जीव दु:खी नहीं है, कोई जीव सुखी नहीं है, कोई दोषित नहीं है। सबकुछ रेग्यूलर ही है। सब जीव निर्दोष ही दिखाई देते हैं। हमें भी निर्दोष दिखाई देते हैं लेकिन हमें श्रद्धा में निर्दोष दिखाई देते हैं, श्रद्धा में और ज्ञान में, चारित्र में नहीं, इसीलिए हम कहते हैं न कि 'तूने यह गलत किया, इसका यह अच्छा है।' जब तक अच्छा-बुरा कहते हैं तब तक वर्तन में निर्दोष नहीं दिखाई देते! हमें श्रद्धा में ज़रूर निर्दोष दिखाई देते हैं लेकिन अभी तक यह वर्तन में नहीं आया है। जब यह वर्तन में आएगा तब हमारी तीन सौ साठ डिग्री पूरी हो जाएँगी। हमारे मन में कुछ भी नहीं है, राग-द्वेष ज़रा से भी नहीं हैं। शब्दों में कहते हैं।

बावा के बारे में समझने के बाद सभी शास्त्र पढ़े

अब यह विज्ञान शास्त्रों में कैसे मिल सकेगा? किसी भी जगह पर नहीं हो सकता। यह तो जब दस लाख सालों में प्रकट होता है, तब ज़ाहिर हो जाता है। केवलज्ञान जानने के बाद बोलना नहीं रहता है। खटपटिया नहीं रहते न! जानते हैं लेकिन खटपट नहीं करते। जो जानते नहीं हैं, वे खटपट कैसे करेंगे? और मैं तो जानता हूँ और खटपट भी करता हूँ और बुखार का भी पूछता हूँ, कब से बुखार आ रहा है? और मैं जानता भी हूँ कि पूछने वाला कौन है, बुखार किसे आ रहा है। वह सब जानता हूँ!

बावा के बारे में सुना है आपने? मेरा पूरा ही ज्ञान बाहर आ गया है!

प्रश्नकर्ता : सब को अंतिम ज्ञान मिल गया!

दादाश्री : हाँ, मिल गया। वह तो अगर किसी दिन निकल जाए तो वास्तव में निकल जाता है। ऐसी बरसात होती है, एक ही बरसात से उग निकले उतनी बरसात होती है। चारों महीनों में सिर्फ एक ही बरसात से उग जाते हैं, नहीं तो, चारों महीने बरसात हो फिर भी फसल न उगे, पानी मीठा नहीं है न! मीठी बरसात तो एक ही बार होती है। यह भी वैसा ही हुआ है।

आपको बावा की बात समझ में आई? एक्ज़ेक्ट? तब तो सभी शास्त्र पढ़ लिए। यह जो उदाहरण दिया है न, इसमें तमाम शास्त्रों का सार आ गया। इतना यदि समझ में आ जाए न, कि

किस हद तक, कहाँ तक उसकी डिमार्केशन लाइन है! तब कहेंगे, जब तक फिज़िकल है, तब तक मंगलदास है।

यह बात दुनिया में कभी बाहर आई ही नहीं है। पहली बार बाहर आई है। मेरी भावना है, लेकिन उसे कैसे बताएँ? ऐसा किस तरह कह सकते हैं? आपको समझ में कैसे आएगा? बावा कौन और मंगलदास कौन और मैं कौन? इसलिए मैं, बावा और मंगलदास में सबकुछ फिट हो गया।

'बावा' के शुद्ध होते ही 'मैं' हुआ कम्प्लीट

रियल के लिए आपको कुछ नहीं करना है। यह इतना जो है वह चंदूभाई करेंगे और रिलेटिव शुद्ध होता जाएगा। रिलेटिव शुद्ध होता जाएगा, तो 'बावा जी' शुद्ध होते जाएँगे। अभी ये 'बावा जी' संपूर्ण शुद्ध नहीं कहे जा सकते। 'बावा जी' संपूर्ण शुद्ध हो जाएँगे तब 'मैं' शुद्ध हो जाएगा, कम्प्लीट शुद्ध। 'मैं' भी भगवान!

अभी 'मैं' ज्ञान स्वरूप है, उसके बाद 'मैं' विज्ञान स्वरूप प्रकट होगा! यानी आपको भी यही सेट हो गया है। यह बावा शुद्ध होता जा रहा है और जब वह 'मैं' शुद्ध, साफ हो जाएगा, तब 'मैं' हो जाएगा कम्प्लीट!

प्रश्नकर्ता : उसके बाद 'मैं' विज्ञान स्वरूप होता जाएगा।

दादाश्री : जब तक बोलते हैं, तब तक ज्ञान स्वरूप है।

प्रश्नकर्ता : जब तक 'मैं' बोलता है तब तक ज्ञान है। 'मैं' सुनता रहता है और ज्ञान बोलता रहता है।

दादाश्री : उसके बाद जब ज्ञान का बोलना भी बंद हो जाता है तो, वह विज्ञान है। विज्ञान में फिर आवाज़ वगैरह नहीं होती। पूर्णाहुति! पूर्ण दशा!

प्रश्नकर्ता : यानी जिसे तीन सौ साठ डिग्री कहते हैं, वह विज्ञान स्वरूप है?

दादाश्री : हाँ, तीन सौ साठ हो जाने के बाद बोल या शब्द नहीं रहते।

प्रश्नकर्ता : तो जैसे-जैसे ज्ञान बोलता है और 'मैं' सुनता जाता है, वैसे-वैसे डिग्रियाँ बढ़ती जाती हैं।

दादाश्री : बढ़ती जाती हैं।

जब तक शब्द हैं तब तक हम बावा हैं लेकिन शब्द अलग हैं, शब्द रिलेटिव हैं और रियल में शुद्ध, विज्ञान है। हम दोनों तरफ हैं। एक, विज्ञान स्वरूप हैं और जो बावा के रूप में है, वह ज्ञान स्वरूप है। ज्ञान रिलेटिव है और विज्ञान रियल है। हमारा यह रिलेटिव बंद हो जाएगा तो वह (विज्ञान स्वरूप) पूर्ण हो जाएगा। रिलेटिव एक-दो जन्मों में बंद हो जाएगा। तब हमारा पूर्णत: विज्ञान स्वरूप हो जाएगा। अर्थात् 'हम' विज्ञान ही हैं लेकिन अभी ज्ञान स्वरूप में हैं, बावा जी। मैं, बावा और मंगलदास।

प्रश्नकर्ता : अच्छा! रिलेटिव छूट गया और वह बावा स्वरूपी हो गया। क्या वही बावा स्वरूप बढ़ते-बढ़ते रियल हो जाता है?

दादाश्री : रियल हो जाता है।

खुद को समझ में आता जाता है धीरे-धीरे। मंगलदास का पद छूट ही गया है। अब 'मैं' और बावा बचे हैं।

प्रश्नकर्ता : अब 'मैं' और बावा! तो क्या 'मैं' बावा को ज्ञान बढ़ाने में हेल्प करता है? क्या ऐसा होता है?

दादाश्री : नहीं। (केवलज्ञान स्वरूप आत्मा केवल प्रकाशक ही है।)

प्रश्नकर्ता : तो बावा का ज्ञान किस प्रकार से बढ़ता है?

दादाश्री : जैसे-जैसे कर्म छूटते जाते हैं वैसे-वैसे फाइल का *निकाल* होता जाता है और वह *निकाल* कौन करता है? व्यवस्थित।

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित *निकाल* करता है। ठीक है। अर्थात् समय आने पर सबकुछ मिलता जाएगा तब *निकाल* होता जाएगा।

दादाश्री : इफेक्ट का *निकाल* हो ही रहा है। कॉज़ेज़ उत्पन्न नहीं होते।

ज्ञानी की करुणा

दुनिया में बाकी सब लोग मिल जाएँगे, लेकिन मैं, ज्ञानी व अंबालाल नहीं मिलेंगे। 'मैं' कौन? 'मैं', वे 'दादा भगवान' हैं। ये ज्ञानी हैं और अंबालाल 'पटेल' हैं। मैं, ज्ञानी व अंबालाल नहीं मिलेंगे। यह योग नहीं मिलेगा, बाकी सब योग मिल जाएँगे। भगवान खुद हाज़िर नहीं होंगे। ये जो हो गए, सो हो गए। मैं, पूरे ब्रह्मांड का भगवान यह कह रहा हूँ, उसकी गारन्टी देता हूँ। 'जो जितना कनेक्शन कर लेगा, वो उसके बाप का।'

वास्तव में ये तीन विभाग तो मैं कर देता हूँ। मैं, ज्ञानी और अंबालाल, तीन विभाग कर देता हूँ और उसके पीछे करुणा है। वास्तव में दो ही भेद हैं - दादा भगवान और अंबालाल, दो ही हैं लेकिन तीन करने का कारण यह है कि दूषमकाल के जीव हैं और शंकालु हैं। बेकार की शंकाओं से तो बल्कि इनका बिगड़ेगा। अत: उन्हें जुदा कर दिया, ताकि शंका ही खड़ी नहीं हो न!

इससे उन्हें ठंडक रहेगी। इसलिए ताकि अब उनका पागलपन खड़ा न हो। वास्तव में दो ही हैं ये। कृपालुदेव ने तो कहा है, 'ज्ञानी पुरुष, वे देहधारी परमात्मा ही हैं' लेकिन ये तीन विभाग बना दिए हैं। इसका कारण है, उसके पीछे की करुणा। ताकि यहाँ से भाग न जाए, यहाँ आया हुआ भटक न जाए।

सही समझ से सिद्धांत होगा पूर्ण

प्रश्नकर्ता : अभी तक तो मुझे पता ही नहीं था कि लोग, 'मैं, बावा और मंगलदास' क्यों कहते हैं?

दादाश्री : इसीलिए यह समझा रहा हूँ। ज्ञानी की दृष्टि से समझ लेंगे तो कल्याण हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : बहुत ही उत्तम उदाहरण है, मैं, बावा, मंगलदास का।

दादाश्री : महात्मा भी खुश हो जाते हैं न! हम बावा ही हैं कहते हैं। आप भी बावा हो, हम भी बावा हैं। आप सुनने वाले बावा और हम बोलने वाले बावा। यह बात तो मैं आपको सिद्धांत पूर्ण करने के लिए बता रहा हूँ। वह भी आपको समझ में आ गया कि मैं किसलिए यह बता रहा हूँ। खुद को *लक्ष* (ध्यान) में रखकर कहा है। बावा ने कहा तो है लेकिन खुद को *लक्ष* में रखकर।

पुद्गल भी बन जाता है भगवान

यह संसार क्या है? डेवेलपमेन्ट का प्रवाह है एक प्रकार का। अर्थात् वह प्रवाह उस तरह से चलता रहता है। उसमें शून्यता से लेकर डेवेलपमेन्ट बढ़ता ही जाता है। वह कैसा डेवेलपमेन्ट होता है? तो वह यह है कि आत्मा तो मूल जगह पर ही है लेकिन यह व्यवहार आत्मा इतना अधिक डेवेलप होता जाता है कि महावीर भगवान बन गए। वह *पुद्गल* भगवान बन गया। क्या ऐसा स्वीकार होता है कि *पुद्गल* भगवान बन गया?

प्रश्नकर्ता : हाँ बना ही है न! बनता ही है न! देख सकते हैं।

दादाश्री : हमारा *पुद्गल* ऐसा नहीं हैं कि पूर्ण रूप से भगवान पद दिखाए। अत: हम मना करते हैं कि 'हम भगवान नहीं हैं' लेकिन इसका क्या अर्थ है कि यह पूर्ण पद नहीं दिखाता? 'आइए चंदूभाई', इन्हें इस तरह से बुलाते हैं, तो वह सब क्या है? क्या ये भगवान के लक्षण हैं? और दूसरा, कई बार हम भारी शब्द भी बोल देते हैं। हमें खुद को भी समझ में आता है कि यह भूल हो रही है। ऐसा पूरी तरह से समझ में आता है, एक बाल जितना भी कुछ ऐसा नहीं निकल जाता कि जब हमें हमारी भूल न दिखाई दे। भूल होती है लेकिन तुरंत ही पता चल जाता है। (भूल है) वह डेवेलपमेन्ट की कमी है, भगवान बनने में। अत: हम मना करते हैं। भगवान बनना अर्थात् सारे आचार-विचार, सभी क्रियाएँ भगवान जैसी ही लगें। तब क्या होता है? आत्मा तो आत्मा ही है, शरीर भगवान बना है, उसी को डेवेलपमेन्ट कहते हैं। आप अभी इतने डेवेलपमेन्ट तक पहुँचे हो, अब इतना डेवेलपमेन्ट बाकी रहा कि देह भी भगवान बन जाए। वह वैसा बनता ही जा रहा है, लोगों का (सभी महात्माओं का) ऐसा ही हो रहा है। अगर संयोग उल्टे मिलें तो उनमें से कितने ही नीचे भी चले जाते हैं! हम रोज़ हमारा देख लेते हैं कि एक अक्षर भी किसी के प्रति विरोध न हो हमारा। किसी के साथ बिल्कुल भी मेल न खाए चाहे वह उल्टा बोले तब भी उसके प्रति विरोध नहीं रहता।

बावा का अस्तित्व है, मंगलदास का उपराणा लेने से

प्रश्नकर्ता : बावा को बावा का अस्तित्व खत्म करने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : अब अस्तित्व उत्पन्न हो सके, ऐसा है ही नहीं। यदि बावा के पक्ष में नहीं बैठेंगे तो बावा के बच्चे नहीं होंगे। जब कोई 'तुझे' गाली दे, उस क्षण यदि तू खुद का रक्षण न करे तब वह सब फिर से होगा ही नहीं।

मंगलदास का रक्षण करने से हम बावा ही रहेंगे और बावा का रक्षण करेंगे तो हम वापस मंगलदास ही बनेंगे। उसका जो हिसाब है वह उसे मिलता ही रहेगा, हमें देखते रहना है। क्या हो रहा है, उसे देखो, वही अपना मार्ग है।

ये कहते हैं, 'हमारे दोष क्यों नहीं बताते?' मैंने कहा, 'दिखाई देंगे तब बताएँगे न?' जब हमारे हाथ में आएगा, तब वह फाइल निकालेंगे। हाथ में नहीं आए, इसलिए मैंने समझा कि इसने दोष निकाल दिए होंगे। फिर जब वह हाथ में आता है तब दिखा देते हैं।

और जब खुद को खुद की भूल दिखाई देगी तब डिसिज़न आ जाएगा। अब बहुत समय

तक बावा के रूप में नहीं रहेगा। अब भगवान बन जाएगा। खुद अपनी भूलें देखे तभी से भगवान बनने की तैयारी होने लगती है।

अत: इतना देख लेना कि 'अगर कोई मुझे गाड़ी से उतार दे तो क्या होगा।'

प्रश्नकर्ता : ठीक है, दादा। सामने वाले की पोज़िशन में आ जाना है तुरंत।

दादाश्री : हाँ। सामने वाले के प्रति भूल हो जाए तो संभाल लेना। इसके बावजूद भी अगर वह अपने आप उलझन में पड़े तो उसके लिए आप ज़िम्मेदार नहीं हो। यदि अपनी वजह से उलझन में पड़ जाए तो अपनी जोखिमदारी है। कितनी ही भूलें बताई नहीं जा सकतीं और मैं तो इतना नियम वाला हूँ कि उनसे पूछता हूँ कि 'यदि आपको (आपकी) भूल बताऊँ तो आपको बुखार नहीं चढ़ेगा न?' तब अगर वह कहे, 'नहीं दादा। वह तो मुझे आपसे ही जानना है।' तब मैं बता देता हूँ। अब बुखार चढ़ने को रहा ही कहाँ है? जहाँ बावा को खत्म ही हो जाना है, वहाँ। जब तक आप बावा हो तब तक भूल होना संभव है।

प्रश्नकर्ता : आपको मुझे भी बताना है दादा, क्योंकि अभी भी, अगर *पुद्गल* में ऐसी कोई खामी हो जो स्थूल रूप से देखी जा सकती है लेकिन अगर कुछ सूक्ष्म है तो पता नहीं चलता।

दादाश्री : ठीक है। कितने ही दोष दिखने लगे हैं लेकिन अभी भी अंदर कुछ-कुछ रह गए हैं। फिर वे हम बता देते हैं। हमें तो किसी भी प्रकार से बावापन खत्म करना है। बावापन छूट जाना चाहिए। अनंत जन्मों तक यही काम किया था। अब किसी भी तरीके से छूटना ही है। हम सभी का दृढ़ निश्चय है।

मैं भूल रहित हो गया इसलिए दूसरों की भूल दिखा सकता हूँ। आपको आपकी भूल पता लगने में देर लगेगी। खुद करे और खुद ही जान सके, वह मुश्किल है। मैंने ज्ञान दिया है इसलिए जानने लगे हैं कि खुद कौन है? बावा तो वह जानता ही नहीं है न! यदि आप 'मैं' हो, तो बावा की सभी भूलें देख सकते हो लेकिन अभी भी कितनी ही बार बावा बन जाते हो न!

पहुँचे परमात्मा के पोर्च में

तो फिर वह मान्यता ठीक से फिट हो गई है न? आप बावा से अलग हो, प्योर हो और हंड्रेड परसेन्ट प्योर स्वरूप! भगवान! अब आज्ञा में रहने से परसेन्ट बढ़ते जाएँगे धीरे-धीरे और अगर गर्वरस चखना बंद हो गया तो बढ़ेंगे। अगर गर्वरस चखते हैं तो मार्क्स नहीं बढ़ते। वहीं के वहीं रह जाता है, बल्कि मार खा जाता है क्योंकि न खाने की चीज़ खा ली। उल्टी करने की चीज़ थी उसे खा गए!

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने वह कहा न, कि यह जो बावा है, आप उससे अलग हैं, भगवान हंड्रेड परसेन्ट प्योर हैं और फिर यह मंगलदास तो है ही वहाँ पर।

दादाश्री : मंगलदास तो थे।

प्रश्नकर्ता : हाँ तो चार हुए?

दादाश्री : नहीं, चार नहीं, तीन ही हुए। तीसरा स्टेशन तो लंबा है इसीलिए फाटक ज़रा लंबा है। उसे चौथा स्टेशन, नया स्टेशन नहीं कहेंगे। एक स्टेशन होता है तो वह यहाँ से शुरू हुआ और सौ गज़ दूर या इतना बड़ा हो कि सौ

मील दूर होता है लेकिन जहाँ से शुरुआत हुई वह स्टेशन ही कहलाएगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : जब वह फाटक आएगा तब बाहर निकल पाएँगे। भगवान फाटक के पास हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : जैसे ही 'उस' फाटक को छुआ तो वह भगवान बन जाएगा। तो इसे एक कहेंगे या दो कहेंगे? एक ही। और वह तो मन में समझना है कि प्योर सोल का स्टेशन आ गया। प्योर सोल बन गया। अब वह ज़रा ज़्यादा लंबा है तो चाय पीते-पीते जाएँगे।

अब हुआ मुक्ति का विश्वास

इन सब के कनेक्शन मिलते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : मिलते हैं।

दादाश्री : जिसे हम ताल मिलना कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : ताल मिलता है। लिंक मिलती है। सभी लिंक कनेक्ट हो जाती हैं।

दादाश्री : हो ही जाती हैं। इसी को ज्ञान कहते हैं। दस जगह पर कनेक्ट हो जाए और दूसरी चार जगहों पर कच्चा पड़ जाए तो वह ज्ञान नहीं कहलाएगा। फिर यह बात अलग है कि समझ में न आए लेकिन समझ में आ जाए तभी काम का है न!

जो ज्ञान किसी भी जन्म में नहीं मिला था, वह मिला है और इनका तो राह पर आ गया है उदाहरण और दलील के साथ कि 'मैं कौन हूँ?' 'बावा कौन है?' और 'मंगलदास कौन है?'

बावा को देखा, मंगलदास को भी देखा। अब हम अपने खुद में आ गए हैं। किस उम्र में?

आपको समझ में आया न ठीक से? अब हमें खुद में रहना है, 'मैं' में रहना है। बावा तो था ही। बहुत दिनों तक उसमें रहे। बदगोई हुई, शादी की, पछताए भी सही, कोई है जो नहीं पछताया?

प्रश्नकर्ता : इसमें रिलेटिव में तो पूरी तरह से डूबे हुए थे।

दादाश्री : पूरी तरह से यानी कि डूबे हुए थे और उसमें भी ऐसा था कि अगर डबल डुबाया जाए तो उसमें भी मज़ा आता था। यह तो अभी ही बदला है न?

प्रश्नकर्ता : मार्ग मिला है इसलिए अब अंदर ऐसा विश्वास है कि निकल पाएँगे।

दादाश्री : इस चीज़ का विश्वास हुआ! धन्यभाग हैं! जो इस बात को समझ गया न, उसका तो कल्याण हो गया! हम तो मैं, बावा और मंगलदास इतना समझ जाएँगे। उसमें सभी शास्त्र आ गए। मंगलदास, वह बाहर का स्वरूप है, बावा अर्थात् अंदर का स्वरूप और मैं, वह आत्मा है। मंगलदास नाम है, बावा प्रतिष्ठित आत्मा है और 'मैं' अर्थात् मूल आत्मा!

बावा ही अक्षर पुरुषोत्तम कहलाता है, मूल पुरुषोत्तम नहीं। मूल पुरुषोत्तम तो पूर्ण स्वरूप में ही हैं।

यदि वह (बावा) 'मैं' में आ जाएगा तो अक्रम विज्ञान का ध्येय पूरा हो जाएगा!

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

15-25 जनवरी : लगभग सात साल के बाद पूज्यश्री के साथ बड़ी यात्रा का आयोजन हुआ, सम्मेत शिखर-राजगीर की उसमें लगभग 2700 महात्माओं ने लाभ लिया। महात्माओं के लिए स्पेशल ट्रेन की व्यवस्था की थी, एक ट्रेन मुंबई से और एक ट्रेन अहमदाबाद से थी। जहाँ ट्रेन का हॉल्ट रहता था, वहाँ महात्माओं ने दादाई गरबा करके आनंद लिया। कलकता सत्संग कार्यक्रम को पूरा करने के बाद पूज्यश्री फ्लाइट से 'गया' शहर गए। संयोगवश इस फ्लाइट में ज़्यादतर महात्मा ही थे। पूज्यश्री 'गया' शहर का प्रसिद्ध महाबोधी टेम्पल देखने गए। जहाँ भगवान बुद्ध और बोधीवृक्ष के दर्शन किए। वहाँ मंदिर के व्यवस्थापकों ने पूज्यश्री का सम्मान किया। महात्मा 'गया' स्टेशन पर उतरे। रहने के लिए इन सभी का राजगीर और पावापुरी में अलग-अलग ग्रुप में आयोजन किया गया था। पहले तीन दिन शाम को 'विरायतन' में पूज्यश्री का सत्संग और दर्शन का कार्यक्रम हुआ। पूज्यश्री का नालंदा विद्यापीठ, बोधिस्तूप-राजगीर, पावापुरी में दर्शन का कार्यक्रम इस प्रकार रखा था कि अलग-अलग ग्रुप को यात्रा का लाभ मिले। बोधिस्तूप के लिए पूज्यश्री सिंगल चेर रोप-वे में गए थे। महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ इन्फॉरमल सत्संग का लाभ लिया और गरबा किए। फिर पूज्यश्री ने पावापुरी में समोवसरण मंदिर के दर्शन किए और महात्माओं के साथ इन्फॉरमल सत्संग किया और महात्माओं ने गरबा किए। वे ब्रह्मचारी भाईओं के साथ पावापुरी में महावीर भगवान के निर्वाण स्थल-जलमंदिर दर्शन के लिए गए। महात्माओं ने लच्छवाड़ व राजगीर के पाँच पहाड़ों की यात्रा की। उसके बाद सम्मेत शिखर के रास्ते में भगवान महावीर की केवलज्ञान भूमि 'ऋजुवालिका' में दर्शन किए। जहाँ भगवान की नयनरम्य प्रतिमा गोदहन मुद्रा में है। सम्मेत शिखर में पूज्यश्री कोरिया भवन स्थित देरासरों में दर्शन के लिए गए। सम्मेत शिखर में ज्ञानविधि में 205 मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान प्राप्त किया। शिखर जी पहाड़ यात्रा की शुरुआत भोमिया जी के दर्शन से हुई। महात्माओं ने सुबह-सुबह पहाड़ यात्रा शुरू की। शिखर जी पहाड़ पर जलमंदिर में पूज्यश्री ने पार्श्वनाथ प्रभु के दर्शन करके ब्रह्मचारी भाईयों-बहनों को ब्रह्मचर्य के लिए विशेष विधि करवाई। गौतम स्वामी टूंक पर महात्माओं के साथ पूज्यश्री का सत्संग हुआ। वापस आते समय पूज्यश्री ने पहले पारसनाथ स्टेशन से मुंबई जाने वाली ट्रेन में 'गया' शहर तक यात्रा की। उसके बाद 'गया' शहर से मुगलसराय स्टेशन तक अहमदाबाद की ट्रेन में बैठे। जो रात के दो बजे मुगलसराय पहुँची थी, जहाँ पर वाराणसी के महात्माओं ने पूज्यश्री का स्वागत किया। वारणसी से अहमदाबाद की फ्लाइट में बैठने से पहले पूज्यश्री ने वारणसी के महात्माओं के साथ सत्संग किया और दर्शन का लाभ दिया। पूज्यश्री ने दोनों ट्रेन के महात्माओं को व्यक्तिगत चरणस्पर्श दर्शन दिए और सत्संग भी किया।

पूज्यश्री के सीमंधर सिटी में आगमन पर महात्माओं ने ढोल-नगाड़े बजाते हुए, पुष्पवृष्टि करके उनका भव्य स्वागत किया। इस तरह आनंद और उल्लास के साथ यात्रा संपन्न हुई।

31 जनवरी से 3 फरवरी : बड़ौदा के मांजलपुर में पूज्यश्री की निश्रा में सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। स्थानिक महात्माओं ने केसरी कलर की पगड़ी और खेस पहनाकर पूज्यश्री का स्वागत किया। पहले दो दिनों में 'सांसारिक जीवन, सहजता समेत' और 'मतलब भरा स्वार्थी सांसारिक' टॉपिक पर पूज्यश्री का सत्संग हुआ। ज्ञानविधि में 880 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया था। पूज्यश्री ने बड़ौदा त्रिमंदिर पधारकर भगवान के दर्शन किए और वहाँ सेवार्थी सत्संग का आयोजन हुआ। लगभग 600 सेवार्थियों को पूज्यश्री के सत्संग व दर्शन का लाभ मिला था। अंतिम दिन ज्ञान की प्रगति के लिए आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग हुआ।

4-6 फरवरी : दाहोद शहर में छः साल बाद पूज्यश्री के सत्संग का आयोजन हुआ। स्थानिक महात्माओं ने उत्साहपूर्वक स्वागत पूज्यश्री का किया। पहले दिन प्रश्नोत्तरी सत्संग के बाद अगले ज्ञानविधि हुई, उसमें 1005 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। कुछ लोग राजस्थान और मध्यप्रदेश से ज्ञान लेने के लिए आए थे। सेवार्थी सत्संग में 275 महात्माओं ने पूज्यश्री के व्यक्तिगत दर्शन का लाभ लिया। पूज्यश्री दाहोद त्रिमंदिर के लिए ली हुई जगह पर गए और प्रार्थना-विधि करवाई थी। अडालज वापस आते समय उन्होंने गोधरा त्रिमंदिर दर्शन किए और गोधरा के 650 महात्माओं को चरणस्पर्श दर्शन का लाभ दिया और त्रिमंदिर के सेवार्थीओं से बातचीत की।

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- ➢ **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- ➢ **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर हर रोज़ रात 10 से 11 (हिन्दी में)
- ➢ **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ सुबह 7 से 8 (हिन्दी में)
- ➢ **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- ➢ **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- ➢ **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम से शुक्र सुबह 7 से 7-30 (कन्नड़ में)
- ➢ **'दूरदर्शन'-गिरनार** हररोज़ पर सुबह 7 से 7-30, दोपहर 2 से 2-30 रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- ➢ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3-30 से 4-30, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

USA-Canada
- ➢ **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST
- ➢ **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- ➢ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 9 GMT
- ➢ **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6 to 6-30am GMT)
- ➢ **'MA TV'** पर हर रोज, शाम 5-30 से 6-30 GMT - (गुजराती में)

Australia
- ➢ **'Rishtey'** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE ➢ **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में) UAE

USA-UK-Africa-Aus. ➢ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

Form No. 4 (Rule No. 8)

Information about 'Dadavani' Hindi Magazine

1. **Place of Publication :** Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. **Periodicity of Publication :** Monthly
3. **Name of Printer :** Amba Offset, **Nationality :** Indian,
   Address : B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.
4. **Name of Publisher :** Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, **Nationality :** Indian,
   Address : Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
5. **Name of Editor :** Dimple Mehta, **Nationality :** Indian, **Address :** same as above. (As per No.4)
6. **Name of Owner :** Mahavideh Foundation (Trust), **Nationality :** Indian,
   Address : same as above. (As per No.4)

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.

Date : 15-03-2020

sd/-
Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
(Signature of Publisher)

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

उत्तर प्रदेश

इलाहाबाद **दिनांक : 2 अप्रैल** **समय :** दोपहर 2 से 4 **संपर्क :** 9935378914
स्थल : विज्ञान परिषद, महर्षि दयानंद मार्ग, इलाहाबाद (प्रयागराज).

मिर्जापुर **दिनांक : 3 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 -30 **संपर्क :** 9415288161
स्थल : शहीद उद्यान, नारघाट, जिला - मिर्जापुर.

मुघलसराई **दिनांक : 4 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 -30 **संपर्क :** 9794849099
स्थल : जयस्वाल भवन, परमार कटरा, (पं. दिनदयाल उपाध्याय नगर), मुघलसराई.

वाराणसी **दिनांक : 6 अप्रैल** **समय :** सुबह 11 से 6 **संपर्क :** 9795228541
स्थल : श्वेताम्बर जैन धर्मशाला, भेलूपुर, वाराणसी.

गाज़ियाबाद **दिनांक : 6 अप्रैल** **समय और स्थल की जानकारी के लिए** **संपर्क :** 9968738972

गोरखपुर **दिनांक : 7 अप्रैल** **समय :** शाम 4-30 से 7-30 **संपर्क :** 9026119906
स्थल : राधेश्याम निषाद, EWS 29, शास्त्री नगर कोलोनी, राजेन्द्र नगर के पास, गोरखपुर.

कुशीनगर **दिनांक : 8 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 6388218155
स्थल : स्वामी नाथ शर्मा, गरुण नगर, डॉ. ए. के. सिंह पडरौना के हॉस्पिटल के पास, कुशीनगर.

महाराजगंज **दिनांक : 9 अप्रैल** **समय और स्थल की जानकारी के लिए** **संपर्क :** 9793353018

हरियाणा

गुडगाँव **दिनांक : 4 अप्रैल** **समय :** सुबह 10-30 से 12-30 **संपर्क :** 9873933544
स्थल : रेल विहार कम्युनिटी होल, सेक्टर-15, पार्ट-2, गुडगाँव.

फरीदाबाद **दिनांक : 4 अप्रैल** **समय और स्थल की जानकारी के लिए** **संपर्क :** 9891866841

बिहार

कटिहार **दिनांक : 10-11 अप्रैल** **समय :** सुबह 10 से 5 **संपर्क :** 9931825351
स्थल : श्री खाटू श्याम मंदिर, बड़ा बाज़ार, अरगडा चौक, कटिहार.

पटना **दिनांक : 12-13 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9431015601
स्थल : जैन भवन, गोविंद मित्रा रोड़, पटना.

छत्तीसगढ़

रायपुर **दिनांक : 4-5 अप्रैल** **समय :** सुबह 10 से 6 **संपर्क :** 9329523737
स्थल : सुदामापुरी धर्मशाला, मुख्य रोड, चंपारण, जिला-रायपुर.

दुर्ग **दिनांक : 6 अप्रैल** **समय और स्थल की जानकारी के लिए** **संपर्क :** 9479055563

बिलासपुर **दिनांक : 8 अप्रैल** **समय की जानकारी बाकी** **संपर्क :** 9425530470
स्थल : बी-190, अज्ञेय नगर, पुराना खान कोचिंग, बिलासपुर.

महाराष्ट्र

भुसावल **दिनांक : 9 अप्रैल** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9420942944
स्थल : गुरुनानक सेवा मंडल (मेईन), सिंधी कोलोनी, संत कंवरराम के पुतले के पास, भुसावल.

आसाम

तिनसुकिया **दिनांक : 4 अप्रैल** **समय :** दोपहर 3 से 6 **संपर्क :** 9577697159
स्थल : राधा कृष्ण मंदिर, हुकान पुखुरी, शिव धाम के पास, तिनसुकिया.

गुवाहाटी **दिनांक : 5 अप्रैल** **समय :** दोपहर 1 से 4 **संपर्क :** 9954821135
स्थल : श्रध्दांजलि कानन पार्क, स्टेट जू के पास, गुवाहाटी, आसाम.

तेजपुर **दिनांक : 6 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9101753686
स्थल : हरी शार्म हाउस, बसंतीपुर, लेन नं. 5A, रूपम पेट्रोल पंप के पास, तेज़पुर.

नलबाड़ी **दिनांक : 7 अप्रैल** **समय :** सुबह 11 से 1 **संपर्क :** 7002949660
स्थल : बारामा बाज़ार, निज़ जुलुकी, नीलिमा बोरो हाउस, बारामा, नलबाड़ी.

दिल्ली

दिल्ली दि. : 5 अप्रैल संपर्क : 9810098564

पंजाब

अमृतसर दि. : 11 अप्रैल संपर्क : 9872298125
गढ़शंकर दि. : 12 अप्रैल संपर्क : 8968127479
चंडीगढ़ दि. : 12-13 अप्रैल संपर्क : 9780732237
लुधियाणा दि. : 16 अप्रैल संपर्क : 9465051163
जलंधर दि. : 17-19 अप्रैल संपर्क : 9216042571

हिमाचल प्रदेश

धर्मशाला दि. : 14-15 अप्रैल संपर्क : 9805254559

बंगाल

बिरलापुर दि. : 10 अप्रैल संपर्क : 9831079123
कोलकाता दि. : 11-12 अप्रैल संपर्क : 9831079123

राजस्थान

श्री गंगानगर दि. : 10 अप्रैल संपर्क : 8824936016
उदयपुर दि. : 10 अप्रैल संपर्क : 9414538411
पाली दि. : 11 अप्रैल संपर्क : 9252065202
जोधपुर दि. : 12 अप्रैल संपर्क : 8963005190
जैतारण दि. : 13 अप्रैल संपर्क : 9413172239
चितौरगढ़ दि. : 14 अप्रैल संपर्क : 8078623672

महाराष्ट्र

धुले दि. : 10-11 अप्रैल संपर्क : 9823041061
नासिक दि. : 12-13 अप्रैल संपर्क : 9028939681
अहमदनगर दि. : 14-15 अप्रैल संपर्क : 9422225475
पुणे दि. : 16-17 अप्रैल संपर्क : 9049301155
जलगाँव दि. : 8-19 अप्रैल संपर्क : 9821996663

कर्णाटक

बेलगाम दि. : 7-8 अप्रैल संपर्क : 9945894202
हुबली दि. : 9-10 अप्रैल संपर्क : 9513216111
बेंगलुरु दि. : 11-13 अप्रैल संपर्क : 9342530176

नेपाल

बुटवल दि. : 10-12 अप्रैल संपर्क : +977-9847042399

महात्माओं के लिए आप्तपुत्रों के साथ सेवार्थी शिविर

जयपुर, अजमेर और पाली (राजस्थान) के महात्माओं के लिए - तारीख - **25 व 26 अप्रैल 2020**

समय व स्थल की जानकारी के लिए संपर्क : 8890357990 करें

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा ? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

19 मार्च (गुरु) - **पूज्य नीरुमाँ की 14वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम**

20-21 मार्च (शुक्र-शनि) शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **22 मार्च** (रवि) सुबह 10 से 12 - **आप्तपुत्र सत्संग**

22 मार्च (रवि) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

PMHT (पेरेन्ट्स महात्मा) शिविर

6 मई (बुध)	सुबह 10-30 से 12	**सत्संग पारायण (पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार)**
	शाम 5-30 से 7	**मतभेद मिटाए घर में**
7 मई (गुरु)	शाम 5-30 से 7	**सत्संग पारायण (माता-पिता बच्चों का व्यवहार)**
8 मई (शुक्र)	सुबह 10-30 से 12	**बालक के प्रति फर्ज की बाउन्ड्री**
	शाम 5 से 6-30	**बालक के प्रति फर्ज की बाउन्ड्री**
9 मई (शनि)	सुबह 10 से 12-30	**सत्संग पारायण (पैसों का व्यवहार)**
10 मई (रवि)	सुबह 10-30 से 12	**लक्ष्मी के अंतराय के कारण, परिणाम**
	शाम 5-30 से 7	**लक्ष्मी के अंतराय के कारण, परिणाम**

सूचना : 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। 2) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज़दिकी सेन्टर में और अगर नज़दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 9924348880, 9328661144 (सुबह 9-30 से 12 तथा दोपहर 3 से 7) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

नेशनल हिन्दी शिविर - 2020

20 मई (बुध)	शाम 4-30 से 7	**सत्संग, टोपिक - गर्वरस**
21 मई (गुरु)	सुबह 10 से 11-30	**सत्संग पारायण (माता-पिता बच्चों का व्यवहार)**
	शाम 5-30 से 7	**सत्संग पारायण (पैसों का व्यवहार)**
22 मई (शुक्र)	सुबह 10 से 11-30	**परिणित भाईयों के साथ सत्संग**
	शाम 5-30 से 7	**परिणित बहनो के साथ सत्संग**
23 मई (शनि)	शाम 5 से 8-30	**ज्ञानविधि**
24 मई (रवि)	सुबह 10 से 12	**शिविरार्थीयों के लिए चरण स्पर्श दर्शन**
	शाम 5 से 6-30	**प्रश्नोत्तरी सत्संग**

सूचना : 1) यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। 2) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज़दिकी सेन्टर में और अगर नज़दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 9924348880, 9328661144 (सुबह 9-30 से 12 तथा दोपहर 3 से 7) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

सुरत

29-30 मई (शुक्र-शनि) रात 8 से 11 - **सत्संग** तथा **31 मई** (रवि) शाम 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**

स्थल : गजेरा क्रिकेट ग्राउन्ड, लक्ष्मी रेसिडन्स के पीछे, गजेरा स्कूल के पास, कतारगाम. **संपर्क :** 9574008007

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 079-39830100, 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9328661188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687 **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद:** (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

मार्च 2020
वर्ष-15 अंक-5
अखंड क्रमांक - 173

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/036/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

पहचान, 'मैं, बावा और मंगलदास' की

रात को बारह बजे कोई आकर बाहर से दरवाज़ा खटखटाए, तब हम पूछें कि 'अरे भाई, अभी कौन आया है?' तब कहता है, 'मैं हूँ, मैं। मुझे नहीं पहचाना?' तब हम कहते हैं 'नहीं भाई, मुझे समझ में नहीं आया। कौन हो?' तब कहता है, 'मैं बावा।' 'बावा (संन्यासी)! लेकिन पाँच-सात संन्यासी मेरे परिचित हैं, तुम कौन से बावा हो, मुझे समझ में आना चाहिए न?' तब कहता है 'मैं बावा मंगलदास।' तब वह पहचानता है। अत: जब वह 'मैं, बावा और मंगलदास' इस प्रकार से तीन शब्द कहता है, तब जाकर सामने वाला पहचानता है कि हाँ, वह वाला मंगलदास। उसे तब छवि भी दिखाई देती है। वर्ना, वह पहचानेगा कैसे? दरवाज़ा ही नहीं खोलेगा न! उसे खुद को पता चलना चाहिए न, कि कौन है यह? उसी प्रकार अगर इस 'मैं' को पहचान लिया जाए न तो हल आ जाएगा। उसी प्रकार से इसमें जो 'मैं' है, वह 'आत्मा' है, यह 'चंदूभाई' मंगलदास है और 'बावा' अंतरात्मा है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.